# पवारी परम्पराएं एवं प्रथाएं

## वल्लभ डोंगरे

**सतपुड़ा संस्कृति संस्थान**

**एच आईजी–6, सुखसागर विला,**
**फेज–1, भेल, भोपाल–462021**
फोन–0755–2552362 मोबा. 09425392656
ई मेल–vallabhdongre6@gmail.com
प्रकाशन वर्ष–2012 (दीपावली)
पृष्ठ संख्या–140, मूल्य–111/–



## रचना क्रम

---



# मॉं

बड़ा मधुर है मधु पर उससे, भी मीठा है माँ का गान।
उससे भी मीठी होती है, माँ की सहज सरल मुस्कान।

सभी जगह एक साथ कहते, रह सकता नहीं भगवान।
शायद इसीलिए दिया है, उसने माँ का यह वरदान।

बेटे की हर गतिविधि पर, माँ रखती है अपने कान।
बेटे के हर सुख–दुख को, माँ चेहरे से लेती है जान।

अपने बेटे की खातिर माँ, क्या–क्या न सहती अपमान।
व्रत रखती , पूजा करती, कर देती है जीवन दान।

अपने जीते जी जो देता, माँ को माँ सा सम्मान।
जीवन में उसका ही बढ़ता,घटता नहीं कभी भी मान।

माँ सा दूजा नहीं जगत में, माँ सा कोई नहीं महान्।
माँ ही ईश्वर माँ ही ईसा, माँ ही अल्लाह माँ भगवान।

**वल्लभ डोंगरे**
एच–6, सुखसागर विला, फेज–1,
भेल, भोपाल 462021

# पिता

पिता बँटता है
अपने बेटों में,
खेत में,घर में
घर के सामानों में
पिता बँटता है।

जब बँटता है खेत
खेत नहीं बँटता
बँटता है पिता
खेत की तरह
टुकड़े—टुकड़े
हो जाता है पिता।

जब लड़ते हैं बेटे
बेटे नहीं लड़ते
लड़ता है पिता
खुद ही खुद से
चोट किसी बेटे को आए
खून तो पिता का बहता है
फिर भी पिता बँटता है
अपने बेटों में।

फिर भी पिता बँटता है
अपने बेटों में।



# वृद्धजन : समाज के जटायु व संपाति

वृद्धजन घर—परिवार, समाज और राष्ट्र का अनुभव बैंक है। उनके चेहरे की झुर्रियां उनके अतीत का अध्याय है। उनके पके बाल और पिचके गाल उनकी संघर्षशीलता और जुझारू प्रवृत्ति का परिचायक है। सीने में छिपे उनके दर्द उनकी थाती है। वर्तमान पीढ़ी की सुख सुविध ााएं अतीत के उनके दुख दर्दों की नींव पर टिकी है। घर में वृद्धजन की उपस्थिति भविष्य में हमें अपने वृद्ध होने का अहसास कराती है। यह अहसास ही हमें अपने अशक्त वृद्धजनों की सेवा—शुश्रुषा के लिए प्रेरित करता है। वृद्धों जनों की सेवा का यह संस्कार नयी पीढ़ी अपने माता—पिता से ही सीखती है। बच्चों की हठधर्मिता के आगे जब माता—पिता हार जाते हैं तब घर के वृद्ध जनों की सीख और शिक्षा ही काम आती है। दादा—दादी, नाना—नानी बच्चों को कहानी कहकर या लोरी सुनाकर जो सुखद नींद सुलाते हैं उससे बच्चे नींद का भरपूर मजा लेते हैं। बच्चों के स्वास्थ्य का राज लोरी सुनकर सुखद नींद में सोना और वृद्ध जनों का आश्रय और आत्मीयता ही है। वृद्धजनों का सम्पर्क में रहकर बच्चे सुरक्षित महसूस करते हैं और उनका सम्यक व स्वस्थ विकास होता है।

अभी पवारी संस्कृति इतनी मजबूत है कि उसपर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव कम ही नजर आता है। समाज में अब एकल परिवारों का प्रचलन बढ़ चला है, लोग रोजी—रोटी के लिए परिवार से दूर जाने व रहने लगे हैं, जिससे वृद्धजनों के आश्रय की चिंता स्पष्ट नजर आने लगी है। फिर भी वृद्धजनों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार अभी समाज में जीवित है। समाज में मरने पर पितर पूजा का प्रावधान है, मरणोपरांत भी उसकी तृप्ति और मुक्ति की कामना की जाती है; यहाँ तक की 15 दिन पितृपक्ष भर पितरों की पूजा की जाती है। यह परम्परा वृद्धजनों की सेवा श्रुषुसा के लिए परिजनों को प्रेरित करती है।

वृद्धजन समाज के जटायु और संपाति होते हैं। वे शरीर से अशक्त परन्तु मन और मस्तिष्क से सशक्त होते हैं। समाज को यह समझना ही

होगा कि वृद्धजनों के सम्मान पर ही सम्मान की परम्परा कायम रखी जा सकती है। वृद्धों के अनुभव किसी भी भावी संकट से निजात दिलाने में सहायक हो सकते हैं। जिस समय रावण सीता का अपहरण करके आकाश मार्ग से जा रहा था तब सीता की रक्षा के लिए वृद्ध जटायु ने ही रावण से लोहा लिया था और जटायु के बड़े भाई संपाति ने ही राम को लंका का मार्ग सुझाया था। वृद्ध जटायु और संपाति का योगदान किसी भी युग में अविस्मरणीय है।

हमें चाहिए कि हम अपने घर–परिवार के वृद्धजनों का पर्याप्त सम्मान करें ताकि वक्त पड़ने पर वे हमारे लिए जटायु और संपाति की भूमिका निभाने के लिए तत्पर रहें। वृद्धजनों को भी चाहिए कि वे समय पड़ने पर जटायु और संपाति की भूमिका निभाने के लिए तत्पर रहें।



# चरैवेति, चरैवेति

- जीवन क्या है– कर्म करते चलना। चरैवेति, चरैवेति।
- हम यहॉं ईश्वर का काम कर रहे हैं। हमें अपने जीवन का उपयोग उसकी अच्छाइयों की पूर्ति के लिए करना है। यदि हम ऐसा नहीं करते और अपना जीवन खर्चने के बजाय उसे बचाने का प्रयास करते हैं तो हम अपनी प्रवृत्ति के विपरीत आचरण करते और अपने जीवन को नष्ट करते हैं।
- जीवन का महत्व केवल अपने और अपने परिवार के लिए ही जीने में नहीं है। समाज और पूरी दुनिया को परिवार समझकर "वसुधैव कुटुम्बकम" मानकर और उसके विकास में योगदान देकर जीवन को और अधिक व्यापक और उपयोगी बनाया जा सकता है।
- जीवन मन के बोझों को उतार देने का नाम हैं। जीवन मुक्ति का नाम है, हर बोझ और हर बंधन से मुक्ति।
- जीवन में अर्थ नहीं होता, अर्थ हमें डालना पड़ता है।
- जीवन में अच्छे से अच्छे की आशा करो और बुरे से बुरे के लिए तैयार रहो।
- सबको दे देकर भी तुम चुकोगे नहीं, तुम सबके होंगे और यह सब तुम्हें चुकने नहीं देगा।
- अकेले मुक्त होना नहीं अपितु दूसरों की मुक्ति में सहयोग करना बड़ा पुरुषार्थ है।
- उपासना, अपने भीतर की कमजोरियों से उबरने की प्रक्रिया का नाम है।
- प्रसिद्धि किए गए कार्यों की सुगंध है।
- वेदों में वर्णित है–यतो अभ्युदय निश्रेयस् स धर्मः(जो मनुष्य को अभ्युदय की सिद्धि कराए, निःश्रेयस की सिद्धि कराए, वही धर्म है।)
- जिसे आचरण में धारण किया जाए तथा जो सद्गुण चरित्र की विशेषता बने धर्म है।

- भूमि को पर्जन्य की पत्नी कहा गया है–भूम्यै पर्जन्यपत्नयै। भूमि माता है,पर्जन्य पिता है। दोनों से संतान की कामनापूर्ति की प्रार्थना की गई है। कृषिकर्म को यज्ञ कहा गया है। वेदों में कहा गया है–विद्वानों,इस यज्ञ को करो। हल फालों को संयुक्त करो। जुओ को फैलाओ। तैयार खेत में बीज बोओ,जिससे भरपूर अन्न पैदा हो। तुम्हारे हॅसिए खेत काटें।
- नैतिक रूप से अर्जित धन ही अर्थ है।
- काम से तात्पर्य है–1.कामना, 2.रति संबंध. भारतीय संस्कृति में काम को कला माना गया है।
- काम कला न बन पाए तो वह काल बन जाता है।
- काम को कला का रूप देने और संयत तथा पवित्र रूप प्रदान करने के उद्देश्य से ही विवाह संस्कार अस्तित्व में आया प्रतीत होता है।
- विवाह से जुड़कर व्यक्ति अपनी पत्नी की सहायता से संतानोत्पत्ति करके पितृ ऋण से उऋण होता है।
- ऋण से तात्पर्य है–कृतज्ञता, उत्तरदायित्व या एक प्रकार के कर्त्तव्य का निर्वहन।
- यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और इसका उद्देश्य परिवार, समाज, देश और दुनिया का कल्याण करना है।
- कोई भी ऐसा काम जो बहुत से लोगों के हित, उनकी भलाई के लिए किया जा रहा हो, जिसमें कोई स्वार्थ नहीं हो, वह अध्यात्म है।
- विवाह के समय वर–वधू द्वारा ली जाने वाली शपथ में वर कहता है–हे वरानने,तू अपनी इच्छा से मुझे वैसे ही प्राप्त हुई जैसे तेजोमय सूर्य को जल,दिशाएं और वायु प्राप्त होती है। परमेश्वर तुझे मेरे मन के अनुकूल करें और मैं भी तेरे मन के अनुकूल बनूॅ। वधू भी कहती है–अब मेरी जीवन यात्रा का पथ मुझे आप जैसे पति की ओर ले जा रहा है। मैं कल्याणमय और अरिष्टा होकर



आपके लोक को प्राप्त करूॅ।

*संतुष्टो भार्ययाभर्ता भर्त्री भार्या तथैव च*
*यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।*

- जिस गृह में पति से पत्नी और पत्नी से पति संतुष्ट रहते हैं,वहॉ स्थिर रूप से कल्याण निवास करता है।
- ऋतुओं का आगमन जीवन का उल्लास है।
- पर्व जीवन जीने की कला है, शैली है।
- व्रत एक प्रकार की प्रतिज्ञा है जिसमें निश्चय होता है। जीवन में संयम और आत्मनियंत्रण की शक्ति व्रत के माध्यम से प्राप्त होती है।
- एक से दूसरे के मिलन का नाम संक्रांति है।
- पर्व का शाब्दिक अर्थ है–गॉठ। जैसे गन्ने में कुछ अंतराल पर गॉठे होती हैं। मुख्य तिथि का संयोग पर्व कहलाता है। कुछ अंतराल पर मानव जीवन में रस, ऊर्जा, उत्साह, उल्लास, उमंग भरने वाले अंतराल पर्व कहलाते हैं ताकि मानव नए सिरे से जीवन को पूर्णता के साथ जी सके।
- मोह से हटना और स्वयं के देहावसान के लिए मनोभावों से तैयार होना ही मोक्ष है।
- मौत जिंदगी का अंतिम पर्व है।
- मृत्यु के बाद आदमी को पैसा नहीं पुण्य जिंदा रखता है।
- अपने सर्वश्रेष्ठ को प्राप्त करता हुआ, अपने को लोक सहयोगी प्रमाणित करते हुए, अपने आस्तित्विक आलम्बन के सहारे व्यक्ति द्वारा मृत्यु को निर्विघ्न, सहर्ष स्वीकार करना मोक्ष है।

# परम्पराएं एवं प्रथाएं

समाज एक वृक्ष की तरह होता है जिसकी छांव में व्यक्तित्व का विकास होता है। समाज को हम जो कुछ देते हैं वही वह हमें वापस देता है। हर समाज की अपनी परम्पराएं एवं प्रथाएं होती हैं। यह परम्पराएं एवं प्रथाएं हमारी पैतृक सम्पत्ति होती हैं जिससे मिले विटामिन हमें ऊर्जा देते हैं। जिस प्रकार गुलाब के नीचे की मिट्टी से भी गुलाब की महक आने लगती है उसी प्रकार परम्पराओं एवं प्रथाओं से सराबोर समाज से भी स्वस्थ संस्कारों की महक आती है।

परम्पराएं एवं प्रथाएं विकसित होकर प्रचलन में आने में वक्त लेती हैं। परम्पराओं एवं प्रथाओं से ही समाज की लम्बाई एवं गहराई का ज्ञान होता है। परम्पराएं एवं प्रथाएं व्यक्ति एवं समाज को भूतकाल से जोड़े रखती हैं। परम्पराओं एवं प्रथाओं के माध्यम से आचार–विचार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होते रहते हैं। मानव जीवन गतिमय इसीलिए हो पाता है कि विरासत में उसे परम्पराओं एवं प्रथाओं का स्थायी आधार मिला होता है। जब हम चलते हैं तब एक पैर गतिमान व दूसरा पैर जमीन पर टिका होता है। यदि दूसरा पैर जमीन पर जमा न रहे तो व्यक्ति जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पाता है। जब भी एक पैर आगे बढ़ता हैं तो दूसरा पैर स्थायित्व मॉगता है, जमीन मॉगता है। वर्तमान और भूत का परस्पर सामजंस्य बिठाए बिना मानव अपने जीवन में गतिशील नहीं हो सकता है। अतः कोई भी व्यक्ति या समाज अपनी परम्पराओं एवं प्रथाओं को छोड़कर या उनसे कटकर आगे बढ़ने के बारे में नहीं सोच सकता।

परम्पराएं एवं प्रथाएं मर्यादा रेखाएं होती हैं। ये हमें मर्यादा में रहना सिखाती हैं। लक्ष्मण द्वारा खीचीं गई लक्ष्मण रेखा मर्यादा रेखा थी। उसकी मर्यादा का मान न कर पाने पर सीता को अपहरण का दुख झेलना पड़ा था। अतः परम्पराएं एवं प्रथाएं बंधन नहीं होतीं वे सहारा होती हैं। जैसे डोर पतंग का बंधन नहीं होती अपितु उसका सहारा होती है। डोर के कटते ही पतंग उड़ नहीं पाती वह जमीन पर आ गिरती है, उसी तरह परम्पराओं एवं प्रथाओं को बंधन मानने वाले का हश्र उस पतंग की तरह ही होता है जो डोर को सहारा न मानकर उसे अपना



बंधन मान लेती है। ऊपर उड़ने के लिए मर्यादा की डोर का होना जरूरी है। डोर न होने पर उड़ना दिशाहीन हो सकता है। पवारी परम्पराएं एवं प्रथाएं पवारों की समृद्ध विरासत का प्रतीक है। आज भी पवार ईमानदार, मेहनती, कर्मठ एवं लगनशील होते हैं जो गहरे मूल्यों का गहराई तक जमे होने का प्रमाण हैं।

कई बार परम्पराएं एवं प्रथाएं अनावश्यक अंधानुकरण के कारण भी अस्तित्व में आ जाती है। अतः अनावश्यक अंधानुकरण से बचने की भी जरूरत है। कहते हैं, एक बार किसी कुम्हार के घर विवाह हो रहा था। उसी समय पानी आ गया। बाहर बॅंधे गधे को पानी से बचाने के लिए कुम्हार ने मंडप में लाकर बॉध दिया। उपस्थित लोगों को लगा कि शायद यह भी कोई परम्परा है तो अगली बार जब उपस्थित लोगों के घरों में विवाह हुआ तो उन्होंने भी मंडप में गधा बॉधा। इस तरह अंधानुकरण  एवं सही सोचने–समझने की क्षमता के अभाव में एक अनचाही और अनावश्यक परम्परा अस्तित्व में आ गई। कहने का तात्पर्य यह है कि परम्पराओं एवं प्रथाओं को मानने  एवं अपनाने के पूर्व उनके पीछे छिपे  वैज्ञानिक कारणों की पड़ताल जरूरी है ताकि अंधानुकरण एवं अनावश्यक की परम्पराओं एवं प्रथाओं के कारण बर्बाद होने वाले समय एवं पैसा दोनों की बचत की जा सकें।

परम्पराओं एवं प्रथाओं से जुड़ा व्यक्ति जमीन से जुड़ा होता है। ऐसा व्यक्ति गन्ने के निचले हिस्से की तरह ठोस, रसदार व मीठा होता है। जो व्यक्ति अपनी जमीन से दूर होता है वह गन्ने के ऊपरी हिस्से की तरह फोसा, फीका व रसहीन होता है। अब फैसला आपको करना है कि आप आधुनिकता का हवाला देकर अपनी परम्पराओं एवं प्रथाओं से दूर रहकर अपने जीवन को गन्ने के ऊपरी हिस्से की तरह फोसा, फीका व रसहीन बनाना चाहते हैं या फिर उनसे जुड़े रहकर गन्ने के निचले हिस्से की तरह अपने जीवन को ठोस, रसदार व मीठा बनाना चाहते हैं। पवारी परम्पराओं एवं प्रथाओं पर केन्द्रित यह कृति समाज के समस्त सदस्यों को समर्पित है।

**वल्लभ डोंगरे**

# महाजनों येन गतः स पंथाः

आबू पर्वत पर अग्नि कुण्ड से जन्मे पवार आग की तरह गर्म प्रकृति के, शीघ्र फैलकर कब्जा करने की प्रवृत्ति के एवं दुश्मन को राख कर देने की विरासत के धनी हैं। पवार क्षत्रिय कुल के भीष्म पितामह की परम्परा के परिजन हैं जिनके सम्मुख युद्ध के मैदान में परशुराम की भी एक नहीं चली थी जिन्हें 21 बार पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन करने का दम्भ था। पवार उस क्षत्रिय परम्परा के अनुयायी है जो देव–दानव युद्ध के अवसर पर दशरथ के रूप में युद्ध में देव पक्ष का सहयोग करते हैं। पवार उस लक्ष्मण की ओज वाणी के अनुयायी है जिन्होंने सीता स्वयंवर के अवसर पर परशुराम का ऐसी निर्भीकता से सामना किया था कि उपस्थित राजा गण एवं स्वयं परशुराम भी लज्जित हो गए थे। पवार उस कर्ण की दानशीलता के अनुयायी है जिसने इन्द्र को अपने कवच–कुण्डल भी स्वेच्छा से और बेहिचक दे दिये थे जिनके न रहने से कर्ण को कोई भी आसानी से मार सकता था। पवार दधीचि की उस परम्परा के पोषक हैं जिन्होंने अपनी हड्डियां भी दान में दे दी थी। पवार महाराणा प्रताप की उस परम्परा के समर्थक हैं जिनके स्वाभिमान के आगे अकबर की आभा भी फीकी पड़ जाती थी। पवार राष्ट्र रक्षक विक्रमादिय के शकों पर विजय का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसकी याद में भारतीय नव वर्ष विक्रम संवत् चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा को मनाया जाता है। पवार विक्रमादित्य की उस सत्य व न्याय की परिपाटी के पालनहार हैं जिन्होंने अपने दरबार में नौ रत्नों की सर्वप्रथम परम्परा शुरू की थी जिसे बाद में मुगल यहाँ तक की अकबर ने भी उसका अनुपालन किया था। पवार राजा भोज जैसे साहित्य अनुरागी और आराधक की परिपाटी के प्रणेता हैं जिन्होंने सदैव विद्वानों को प्रश्रय दिया, प्रेम दिया।

पानी की एक बूँद संसार को गीला नहीं कर सकती परन्तु आग की एक चिंगारी समस्त संसार को जलाकर राख कर सकती हैं। अग्नि से जन्मे अग्निवंशीय पवारों की प्रकृति भी आग की तरह हैं जो एक जगह रहने की अपेक्षा फैलने में विश्वास करते हैं। आदमी अपने तक



सीमित हो जाए तो वह मर जाता हैं परन्तु वह फैलकर अन्यों तक पहुँच जाए तो उसका जीवन सार्थक हो उठता हैं वह अमर हो उठता हैं। आज पवार अपने आचार विचार एवं व्यवहार से अग्नि वंश की आभामयी परम्परा को बचाए एवं बनाए रखने में कारगर साबित नहीं हो पा रहे हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति वाले देश में आज भी पवार ऊँची पंगत–नीची पंगत और वर्धा तटीय पवार और वैनगंगा पवार में बंटे हुए हैं। संसार को कुटुम्ब मानने वाले देश में प्रखर–प्रख्यात पवारों का छोटी–छोटी बातों में उलझना उनके राजसी ठाठ–बाट के अनुरूप प्रतीत नहीं होता। राजा भी आम जन की तरह व्यवहार करने लगे तो राजा के राजा होने पर भी बड़ा प्रश्न चिह्न लगता है।

पवार अपने आचरण के कारण महाजन कहलाते थे और गाँवों में आज भी कुछ पवारों को महाजन विशेषण से सम्बोधित किया जाता है। वेदों में वर्णन है–'महाजनों येन गतः स पंथाः।' अर्थात महाजन जिस भी राह चले वह राह धर्म पथ हो जाती है। आज पवारों का व्यवहार क्या धर्मपथ बनने के काबिल है इस पर विचार करने का समय आ गया है। यदि नहीं तो यह सब गिरावट हमारी प्रेरक, प्रेरणादायी, प्राणवान प्रगतिशील, प्रख्यात पवार परम्परा के अनुकूल प्रतीत नहीं होती।

लोगों ने हमारी अग्निमय, आभामय, परम्परा को समझकर ''फूट डालो राज करो'' का हमारे बीच बीजारोपण किया और हमारी एकता का विखंडन कर हमें अलग अलग छितराया। हम आशु विश्वासी होकर विश्वास करते रहे और अपनों से दूर होते रहे। इस तरह पवार परम्परा से धीरे–धीरे हम कटते रहे। पूरे देश में हर राज्य में पवार आज भी वास करते हैं। सबकी राज्यवार अपनी–अपनी भाषा है, अपने–अपने रीति–रिवाज है, और हम इन्हीं को आधार मानकर अपने वालों से अलग–थलग पड़े हुए है। रोटी–बेटी का संबंध करते समय आज भी हमारी रगों में राजसी वैभव कम और आमजन का व्यवहार आम हैं । राजा तो जात–पांत से ऊपर उठकर जो पंसद आए उसे अपनाए, को कहा जाता हैं। मगर आज ऐसा व्यवहार करने वाले को नीची पंगत का करार दिया जाना

करार दिए जाने वालों पर ही एक बड़ा सा प्रश्न चिह्न लगाता हैं।

राजा तब तक राजा होता हैं जब तक उसका हर काम राजा सा होता है। प्रजा सा काम करते ही राजा राजा न रहकर प्रजा बन जाता हैं। प्रजा की तरह व्यवहार करके अपने राजसी वैभव और परम्परा को जीवित रख पाना संभव नहीं है। हम आज भी अपने राजसी व्यवहार को जीवित करके पूरे देश पर विक्रमादित्य, राजा भोज की तरह राज कर सकते हैं। आज भी हम पूरे देश के पवार क्षेत्रियता से ऊपर उठकर एक हो लें तो इस देश का अगला राष्ट्रपति–प्रधानमंत्री पवार हो सकता हैं। यदि हम यह कर सकें तो वेदों का वर्णन सही साबित हो सकता है–'महाजनों येन गतः स पंथाः।

## विक्रम संवत् : प्रताप व शौर्य का प्रतीक

पवारों के पूर्वज और राष्ट्र रक्षक विक्रमादिय के विजय का दिन भारतीय नव वर्ष विक्रम संवत् चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा को मनाया जाता है। शुक्ल पक्ष उजले और प्रकाश का द्योतक है। यह हमें सिखाता है कि हम प्रकाश की ओर देखें, उज्ज्वल पक्ष की ओर देखें, अंधेरे और बुराई को अनदेखा करें। नववर्ष का आगमन जीवन के पुराने ढर्रे को त्यागकर नए को अपनाने का संकल्प पर्व है। कुछ नया सोचकर, कुछ नया करके हम अपने को नित नया कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि इसी दिन भगवान राम का राज्याभिषेक हुआ था और युधिष्ठिर ने धर्म के राज्य की स्थापना की थी।

मान्यताओं के अनुसार सृष्टि का सृजन चैत्र प्रतिप्रदा को हुआ। हिमादी ग्रंथ के अनुसार ब्रह्मा ने इसी दिन सृष्टि की रचना की। भारतीय नववर्ष प्राकृतिक,वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक मानदंडों पर अधिक खरा उतरता है। विक्रम के पराक्रम का स्मरण कर नवराष्ट्र निर्माण की प्रेरणा देने के लिए हमें जगाने, उठाने के लिए कि नकारात्मकता के शकों को पराजित कर हम सकारात्मकता का विक्रम साबित करें। नववर्ष प्रतिप्रदा हर वर्ष आती है ताकि हम सदा जागे रहें, उठे रहें।



| राज्य | नववर्ष | राज्य | नववर्ष |
|---|---|---|---|
| जम्मू काश्मीर | नवरेह | महाराष्ट्र | गुड़ी पड़वा |
| आसाम | बिहू | आन्ध्रप्रदेश | उगादी |
| केरल | विशु | प बंगाल | पोयला |
| पंजाब | वैशाखी,लोहड़ी | तमिल | पुथांडू |
| गुजरात | उत्तरायण | मध्यप्रदेश | मकर संक्रांति |
| झारखंड | सरहुल | केरल | मकरविल्लकू |

**चैत्र प्रतिपदा का महत्व–**

इसे सृष्टि सृजन का दिन माना जाता है।

इसे सतयुग का प्रथम दिन माना जाता है।

इसे शकों पर विक्रमादित्य की विजय का दिन माना जाता है।

इसे नवसंवत के प्रवर्तन का दिन माना जाता है।

इसे राष्ट्र सेवा के संकल्प का दिन माना जाता है।

इसे समाज/देश के प्रति कर्त्तव्यों के निर्वहन का संकल्प दिन माना जाता है।

कदाचित धर्म और राष्ट्र संदर्भों के इन्हीं नायकों, कथाओं, प्रतीकों को गूँथकर लोक ने नववर्ष चैत्र प्रतिप्रदा का उत्सव गढ़ा जिसका उल्लास उन्मुक्त वसंत की समापन की ओर उन्मुख चरम वेला में चौगुणा व चौरफा हो जाता है। गुड़ी पड़वा के रूप में मनाया जाने वाला यह पर्व हमें अपने पूर्वज विक्रमादित्य के प्रताप व शौर्य का स्मरण कराता है तथा उनके पदचिह्नों पर चलने के लिए प्रेरित करता है। उनके द्वारा किए गए कार्यों को देखते हुए उन्हें पूरा साल समर्पित कर दिया गया। कम से कम हम भी ऐसा काम तो कर ही जाएं कि कोई हमें एक दिन के लिए ही सही पर सच्चे मन से याद तो कर पाएं।

# पवारों में पैर पूजा

पवारों में पैर पूजे जाते हैं सिर नहीं। पैर आचरण, हृदय, श्रद्धा और आस्था के प्रतीक हैं। सिर ज्ञान का प्रतीक है। सिर का उठना अंहकार का प्रतीक है। सिर उठे नहीं इसलिए पवारों में पैर पूजने का प्रचलन चल पड़ा। घर के बड़े–बूढ़ों के पैर छूने की परम्परा उनके प्रति सम्मान भावना का प्रतीक है। उनके आगे हमारा अंहकार सिर न उठा पाए इसलिए उनके आगे सिर झुकाया जाता है। संबंधित की मृत्यु होने के उपरांत भी पवारों में पैरों को प्रतीक के रूप में पूजे जाने की प्रथा है। किसी प्रियजन की मृत्यु के बाद उसकी प्रतिमा स्थापित करने के स्थान पर प्रतीकात्मक रूप से उसके पैर स्थापित किए जाने की प्रथा है जिसे थापना कहा जाता है। सामान्यतः यह थापना मिट्टी व पत्थर का बना चबूतरा होता है। अब मिट्टी व पत्थर के चबूतरे के स्थान पर ईंट सीमेंट का पक्का चबूतरा बनाने का प्रचलन भी चल पड़ा है। सामान्यतः यह थापना मृतक के सबसे प्रिय खेत, पेड़ व अन्य किसी स्थान आदि पर स्थापित किया जाता है जिसपर प्रतीकात्मक रूप से दो पैर बने होते हैं।

पितृ पक्ष में पूरे पक्ष भर पितरों के प्रतीकात्मक रूप से पैर ही उकेरे व पूजे जाते हैं। मृत्यु के उपरांत भी पितरों के प्रति यह सम्मान भावना बच्चों को संस्कारित करती है और वे भी अपने माता–पिता के प्रति सम्मान से भर उठते हैं।

हर तीज–त्योहार और खुशी के अवसर पर बड़े–बूढ़ों के पैर छूकर आशीर्वाद लेने से बच्चे भी अपने बड़े–बूढ़ों का अनुसरण करते हैं और आगे चलकर यही संस्कार का रूप ग्रहण करते हैं। घर में मेहमान आने पर एवं घर से मेहमान जाने पर उनके पैर छूकर आशीर्वाद लेने की परम्परा आज भी पवारों में जीवित है।

भरत द्वारा भगवान राम की खड़ाऊ माँगा जाना साधारण नहीं अपितु असाधारण बात है। खड़ाऊ निकृष्टतम चीज होती है। यदि व्यक्ति ने उसे ही पूज लिया तो फिर अंहकार को तो गलना ही है। राजा भरत द्वारा स्थापित मर्यादा का आज भी उसी आत्मीयता से अनुपालन करना एक प्रकार से भगवान राम के प्रति पवारों का सच्चा सम्मान प्रदर्शित करना है।



# बहन–बेटी–बहू के चरण स्पर्श

पवारों में बहन, बेटी–बहू के चरण स्पर्श करने की प्रथा है। बहन, बेटी–बहू के चरण स्पर्श करने के पीछे यही भावना होती है कि उनके प्रति व्यक्ति के मन में कुभाव उत्पन्न न हो। घर की बहन, बेटी व बहू सदैव पवित्र बनी रहे ताकि उनकी कोख से जन्म लेने वाली पीढ़ियॉं सदैव पवित्र व पावन उत्पन्न हो सके। हर शुभ अवसर पर बहन, बेटी व बहू के चरण स्पर्श करके व्यक्ति उनके प्रति अपने मन में सम्मान की भावना बनाए रखने के प्रति संकल्पबद्ध होता है। बहन के चरण स्पर्श कर भाई, बेटी–बहू के चरण स्पर्श कर बाप और ससुर बेटी–बहू के प्रति अपने मन में सम्मान भावना संजोता है और उनकी रक्षा के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होता है।

भाई बहन के चरण स्पर्श कर उसकी रक्षा के प्रति प्रतिज्ञाबद्ध होता है। बहन भी अपने भाई के चिरायु होने की कामना करती है। बेटी के विवाह अवसर पर पिता अपनी बेटी के चरण स्पर्श कर उससे आशीर्वाद की कामना करता है कि उसके जाने के बाद भी पिता का घर भरापूरा रहे और वह जिस घर जा रही है वह भी धन–धान्य से सम्पन्न हो जाए। अपने बेटे के लिए बहू लाते समय भी ससुर अपनी होने वाली बहू के चरण स्पर्श कर उससे इसी तरह के आशीर्वाद की कामना करता है कि उसके आगमन से वर और घर दोनों सुखी सम्पन्न हो जाए। बहू ही कुल के उत्तराधिकारी की जन्मदात्री होती है जिसपर वंश परम्परा निर्भर होती है और आगे भी चलती है, इसलिए वह भी पूज्य होती है। इस क्षेत्र का भुजलिया पर्व बेटी–बहन के सम्मान का प्रतीक पर्व और सावन गीत बहन व बहू के सम्मान का प्रतीक गीत है। इस सावन गीत के माध्यम से बहन और बहू अपने मायके से मिलती और जीने का संबल प्राप्त करती हैं।

इस क्षेत्र में बेटी की विदाई उत्सव है, पर्व है। बेटी का घर आना आनंद है, त्योहार है। बेटी जब ससुराल से घर आती है तो उसका बड़ा आदर–सत्कार किया जाता है। इसका एक पृथक से पूरा पर्व ही है।

भादो माह में महालक्ष्मी ज्येष्ठा और कनिष्ठा दोनों बहनें पुत्री के रूप में मायके आती हैं और ढाई दिनों तक मायके में रहती हैं। विदाई के दिन सारा घर उदास हो उठता है। बेटी के प्रति इतना सम्मान अन्यत्र दुर्लभ है। इस क्षेत्र में बेटी के प्रति इतना प्रेम होता है कि उसे शब्दों में अभिव्यक्त कर पाना संभव नहीं है। यही कारण है इस क्षेत्र में कन्या भ्रूण हत्या का अभी तक एक भी प्रकरण सामने नहीं आया है। साथ ही इस क्षेत्र में बेटी को बेटे के बराबर दर्जा व सम्मान दिया जाता है।

## दुःख में दायित्व बोध की दरकार

पवारों में सामाजिक सरोकार इतना प्रबल होता है कि सुख–दुःख के अवसरों पर एक–दूसरे रिश्तेदारों को सूचित करना मानो उनका अपना दायित्व हो। दुःख के अवसर पर खबर आग की तरह फैलते देर नहीं लगती थी। पक्षियों में जैसे एक कौआ कॉव–कॉव करके सबको खबर करके एकत्रित कर लेता है, ठीक ऐसे ही पवारों में सबको सूचित करके एकत्रित कर लेने की प्रथा है। अधिकांश पवार जन कृषि कार्य से जुड़े होने से गॉवों में रहते हैं। आज मोबाइल का जमाना है,खबर पहुॅचते देर नहीं लगती। परन्तु जब मोबाइल नहीं थे तब भी खबर पहुॅच जाती थी और सब रिश्तेदार एकत्रित हो जाते थे। हाट–बाजार में मिले रिश्तेदारों को या एक गॉव से दूसरे गॉव जा रहे गॉव के व्यक्ति के माध्यम से उस गॉव में रह रहे रिश्तेदारों को सूचना प्रेषित कर दी जाती थी।

गॉव के लोगों में भी परस्पर इतना प्रेम और भाईचारा होता था कि सब एक दूसरे के रिश्तेदारों को जानते थे और जहॉ भी मिले राम–राम कहकर एक दूसरे की खबर लिया करते थे। और न केवल खबर लिया करते थे अपितु संबंधित व्यक्ति के घर जाकर उनके रिश्तेदार द्वारा प्रेषित संदेश उन तक पहुॅचाना अपना धर्म समझते थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि सुख के अवसर पर भी कोई निमंत्रण मुद्रित नहीं किए जाते थे। जिस व्यक्ति के घर कोई शादी विवाह होता था उस घर का सदस्य



अपने रिश्तेदारों के घर जाकर उनके दरवाजे पर हल्दी में रंगे चावल रखकर कार्यक्रम की मौखिक सूचना भर दे देता था। कई बार सदस्य घर पर मिल जाते थे, कई बार घर पर बच्चे या कोई वृद्ध व्यक्ति होता था उसे ही सूचना दे दी जाती थी। शाम को जब परिजन अपने खेत से घर लौटते तब दरवाजे पर रखे चावल के दाने देखकर वे खुशी से उछल पड़ते थे और घर में उपस्थित सदस्यों से कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी ले लिया करते थे। इस खबर को अपने अन्य रिश्तेदारों तक पहुॅचाते देर नहीं लगती थी। हर आने जाने वाले व्यक्ति के माध्यम से यह समाचार अपने अन्य रिश्तेदारों तक पहुॅचा दिया जाता था।

दुख के अवसर पर रिश्तेदारों को सूचना करने का दायित्व गॉव के लोगों व अन्य परिजनों का हुआ करता था। दुःख के अवसर पर शोक संदेश मुद्रित कर वितरित करना प्रचलन में नहीं था। इसे लोग अच्छा नहीं मानते थे। उनका मानना था कि सुख में आमंत्रित किया जाता है, बुलाया जाता है,पर दुख में व्यक्ति को स्वयं आना होता है। दुख के अवसर पर ही व्यक्ति की परख की जाती थी कि वह कितना व्यावहारिक व संवेदनशील है। दुख के अवसर पर शामिल न होने पर संबंधित व्यक्ति के प्रति समाज का रूख कड़ा होता था। व्यक्ति अपराध बोध से दब जाता था और किसी से नजर मिलाकर बात करने का साहस नहीं जुटा पाता था। इस स्थिति से उबरने में उसे सालों लग जाते थे।

आज सुख दुःख के हर अवसरों पर मुद्रित सूचना देने का प्रचलन बढ़ चला है पर इससे सामाजिक सरोकार नहीं बढ़ा है। अब सामाजिक सरोकार सिमटता जा रहा है। पीड़ित व्यक्ति को ही सारी व्यवस्थाएं करनी पड़ती है। व्यक्ति केवल औपचारिकतावश व लोक लाज के कारण उपस्थित भर होते हैं। चेहरा दिखाकर पल्ला झाड़ने में लोग माहिर हो गए हैं। आचरण में यह गिरावट किसी विकट संकट का सूचक है।

# अग्नि पूजा

आदमी के अंदर आग न हो तो वह आगे नहीं आ पाता। आग ही उसे आगे लाती है। आग ही उसे आसमान की ऊँचाई तक पहुँचाती है। एक मान्यता के अनुसार पवारों का जन्म ही आबू के अग्नि कुंड से हुआ

माना जाता है। अतः पवारों का अग्निपुत्र होना या कहलाना वाजिब है। पवारों में अग्नि के प्रति प्रेम प्राकृतिक है। पवारों के घरों में 24 घंटे अग्नि का रखा जाना एक तरह से अग्नि के प्रति उनका यह सम्मान ही है।

पंजाबी शब्द लोहड़ी पवारी शब्द लुह्यड़ी से बना है। परची या सिलगी लकड़ी को लुह्यड़ी कहा जाता है। लोहड़ी पर्व पर पंजाब में जलती लकड़ियों के आसपास इकट्ठे लोग नए अन्न का नैवेद्य अग्नि देवता को अर्पित कर उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। पंजाब में यह पर्व वर्ष में एक बार मनाया जाता है। पवारों के घरों में रोज लुह्यड़ी परचती है, सिलगती है और नैवेद्य चढ़ाया जाता है। इस दृष्टि से हमारे घरों में रोज लोहड़ी (लुह्यड़ी) मनाई जाती है। प्रतिदिन भोजन के पूर्व अग्निदेवता को नेवैद्य चढ़ाना अपने पूर्वज अग्नि और स्वाहा के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

होली आग का त्योहार है। फाग के जरिए मन में दबी विषयवृत्ति को बाहर निकालना और फिर होली में जला देना कंचन सा निखरने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में अपने अंदर की आग बचाए रखना जरूरी है क्योंकि जब तक अंदर आग है तभी तक जीवन है। ईश्वर प्राप्ति के लिए कामना, वासना, राग, द्वेष, ईर्ष्या, अहम् की होली जलानी पड़ती है। जलकर ही कंचन सा निखरा जा सकता है का प्रतीक पर्व है होली। सच्चे मन से प्रभु को चाहने वाला प्रहलाद की तरह आग में से भी जिंदा निकल आता है, जबकि आग में न जलने का वरदान प्राप्त होने पर भी उसका गलत उपयोग करने पर व्यक्ति होलिका की तरह जल सकता है।



# तप

व्यक्ति का जीवन ही तप है। कष्ट साध्य कार्य ही तप है। तप जन्म से निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। चलना, फिरना, दौड़ना, भागना तप है। जीवन जीना भी तप ही है। दूसरों के काम आना भी तप ही है। जीवन का कोई भी काम तप के बिना पूरा नहीं होता। शिक्षा तप है। विवाह करके दाम्पत्य जीवन निभाना तप है। बच्चों का लालन–पालन करना माँ का तप है। तपने पर ही सोना निखरता है। तपकर ही जीवन निखरता है। तप जंगल में जाकर की जाने वाली साधना नहीं है। तप कहीं भी रहकर की जा सकने वाली साधना है। किसान का खेती करना तप है।

एक बार नारद को अपने तप पर घमंड हो गया। उसने प्रभु से पूछा–प्रभु आपका सबसे बड़ा भक्त कौन है? प्रभु ने कहा–किसान। नारद को इसकी अपेक्षा नहीं थी। नारद ने कहा–प्रभु मैं तो दिन रात आपकी भक्ति में डूबा रहता हूँ फिर यह किसान मुझसे बड़ा भक्त कैसे हो गया जबकि यह तो दिन रात खेती करते रहता है। प्रभु ने कहा–नारद,तुम ऐसे नहीं समझ सकोगे। ऐसा करो, यह तेल का भरा कटोरा लेकर जाओ और इस गाँव का पूरा चक्कर लगाकर आओ। ध्यान रहे,तेल की एक बूँद भी कहीं गिरनी नहीं चाहिए। नारद ने कहा–इसमें कौन सी बड़ी बात है, और ऐसा कहकर नारद हाथ में तेल का कटोरा लेकर गाँव का चक्कर लगाने निकल पड़े। नारद तेल की एक बूँद गिराए बिना प्रभु के पास जा पहुँचे तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। प्रभु बोले–नारद, यह तो बताओ, जब तुम तेल का कटोरा लिए गाँव का चक्कर लगा रहे थे तब तुमने प्रभु का नाम कितनी बार लिया। नारद बोले–प्रभु, मेरा पूरा ध्यान तो तेल को संभालने में लगा हुआ था, ऐसे में मैं आपका नाम कैसे ले सकता था। प्रभु को मानो इसी क्षण की प्रतीक्षा थी वे बोले–नारद, जब किसान का मन दिन रात खेती करने में लगा रहता है तब वह प्रभु का नाम कैसे ले सकता है? नारद को चुप देख प्रभु आगे बोले–नारद,मेरा दिन रात नाम लेना तप/जप नहीं है, जो काम जिस व्यक्ति का है वह उसे पूरा मन लगाकर करे वही तप/जप है।

## करदोड़ा बॉधना

कर याने कमर। दोड़ा याने दोरा या धागा। कमर के आसपास बॉधा जाने वाला धागा करदोड़ा कहलाता है। हमारे पूर्वज राजा और रणबॉकुरे होने के कारण युद्ध में जाया करते थे। युद्ध भूमि में मारे जाने पर शवों की पहचान में सुविधा हो तथा तदनुरूप अंतिम संस्कार हो, इसे ध्यान में रखते हुए कमर में धागा बॉधा जाने लगा। आगे चलकर यह एक रस्म में परिवर्तित हो गया और हर पुरूष वर्ग इसे कमर में बॉधने लगा, जो आज पर्यन्त जारी है। एक तरह से यह एक रक्षासूत्र ही हुआ करता था जिसे बहन बेटी, पत्नी या मॉ युद्ध भूमि में जाने वाले योद्धाओं को देकर उनके जीवित लौटने की कामना करती थीं।

## मंढा उजाना

विवाह अवसर पर मंडप छाने की प्रथा है जिसमें जामुन या गुलर की टहनियां मंडप की छत पर छाना(डालना)शुभ माना जाता हैं। विवाह के बाद पहली बारिश की बूँदें पड़ने पर पूरे विधि–विधान के साथ इसे उजाने (उखाड़ने) का रिवाज है, जिसे मंढा उजाना कहते है। मंढा सुख समृद्धि के प्रतीक स्वरूप डाला जाता है। मंढा डालने पर आंगन में छाया हो जाती है, जिससे गर्मी से राहत मिलती है और मेहमानों के भोजन तथा विश्राम के लिए काम में आता है। अब चूँकि घर में बहू के रूप में चॉद का टुकड़ा आ जाता है तो वह घर तथा बाहर दोनों जगह अपने संस्कारों का उजाला फैलाए इसीलिए मंढा उजाया जाता है ताकि घर–ऑगन पुनः उजाले से भर जाए।

## तोरण मारना

विवाह मंडप में गॉव के कोटवार द्वारा तोरण बॉधे जाने का रिवाज है। विवाह के पूर्व दुल्हे को तोरण पार कर मंडप में प्रवेश करना होता है। इस प्रथा को ही तोरण मारना कहते है। पवारों का क्षत्रिय व राजकुल से संबंध होने के कारण दूल्हे को राजा की तरह सम्मान दिया



जाता है और जीवन को युद्धभूमि की तरह लिया जाता है। इसी कारण तोरण मारने या तोरण जीतने जैसा भाव यहॉ भी रहता है। जिस तरह युद्ध जीतकर ही राज्य जीता जा सकता है, उसी तरह दिल जीतकर ही दुल्हन को अपना बनाया जा सकता है।

## बाहुड़ल्या उजाना

घर की बेटी के भावी जीवन की सुख समृद्धि के लिए सावन मास में भुजलिए(जवारे)बोए जाने का रिवाज है। बेटी के विवाह होने पर मॉ के घर बोए जाने वाले इन भुजलियों को ससम्मान विदाई दी जाती है। राखी के दूसरे दिन इन्हें समारोहपूर्वक नदी पर ले जाकर इनकी मिट्टी साफ की जाती है जिसे उजाना कहते हैं। उजाने के बाद इन्हें एक दूसरे को सौंप कर एक दूसरे के जीवन के लिए शुभकामनाओं का आदान प्रदान किया जाता है। एक तरह से यह बेटी को सीख भी है कि जैसे भुजलिए को अपनी जमीन, अपनी मिट्टी से अलग होना पड़ता है, उसी तरह बेटी को भी विवाह होने पर अपनी जमीन, अपनी मिट्टी से अलग होना पड़ता है।

## नाग पूजा

जनमेजय नागयज्ञ कर रहा था। जनमेजय का गुरू आस्तिक महर्षि समाज के टुकड़े होते देख जनमेजय के सामने जाकर खड़ा हो गया और बोला–मुझे भी ज्वाला की भेंट चढ़ा दो। मैं भी नागकन्या के गर्भ से पैदा हुआ हूँ। जनमेजय की ऑखें खुल गईं। विश्ववंद्य आस्तिक जिस जात में पैदा हुआ वह जाति निम्न कैसे?जनमेजय ने आस्तिक के पैर पकड़ लिए। नागयज्ञ बंद हो गया। इस तरह नागपंचमी आर्य और नागजातियों की एकता का प्रतीक पर्व बन गया।

नाग को खेती का देवता माना जाता है। उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के उद्देश्य से नागपंचमी पर उसकी पूजा–अर्चना की जाती है। पवारों में विवाह के बाद भी नव दम्पत्ति के सुखमय जीवन के लिए नागदेवता की पूजा आयोजित की जाती है जिसे नागदेव करना कहते है।

# पोला

बैलों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का पर्व है पोला। इस दिन उनसे कोई काम नहीं लिया जाता है। स्नान आदि कराने के बाद उन्हें सजाया संवारा जाता हैं। शाम को पूरे गॉव के बैलों को एक निश्चित स्थान पर एकत्रित किया जाता है तथा उनकी सामूहिक पूजा अर्चना की जाती है। इस पूजा के बाद उन्हें घर–घर ले जाया जाता है जहॉ उनकी पूजा की जाती है और उन्हें पकवान खिलाए जाते हैं। घर आए बैलों एवं साथ आए व्यक्ति का घर–घर स्वागत किया जाता है और दान स्वरूप प्रतीकात्मक रूप से पैसे दिए जाने की प्रथा है।

# कांकण–तोरण सिराना

विवाह के समय बॉधे जाने वाले कांकण–तोरण को समारोहपूर्वक जल स्रोतों में विसर्जित किए जाने का विधान है। नई–नवेली दुल्हन के मन मस्तिष्क में अपने गॉव के जल स्रोतों के प्रति सम्मान का भाव बना रहे तथा वह जल स्रोतों को स्वच्छ व पवित्र बनाए रखने का संकल्प लेकर तदनुरूप अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करें इस दृष्टि से यह रस्म संपादित की जाती है। पानी को देवता कहा जाता है। पानी से ही जीवन है। पानी बिना जीवन संभव नहीं है। पानी ही जीवन और जीवन ही पानी है यह सीख सिखाने के उद्देश्य से ही कांकण–तोरण को विवाह संस्कार से जोड़ा गया है। जल स्रोतों विशेषकर नदी के प्रति जनमानस में इतना सम्मान समाया हुआ है कि राह चलते भी नदी मिलने पर श्रृद्धाभावना स्वरूप पानप्रसाद जरूर अर्पित किया जाता है।

# करवाचौथ

कन्या से कल्याणी बनने की महायात्रा का नाम है पत्नी। उसकी यह महायात्रा पिता और पति दोनों के लिए कल्याणकारी होती है। पति के सानिध्य में रहकर वह पार्वती, सर्व मंगला, शिवा हो जाती है। उसकी यह पुरूषार्थ यात्रा पति को पूर्णत्व, देवत्व व शिवत्व प्रदान करती है। पति



के जीवन में पत्नी का पदार्पण मंगल माना जाता है। उसका आगमन मंगल्य होता है। इसीलिए विवाह को मंगल कार्य कहा जाता है, और पत्नी को मंगला। दोनों का एक दूसरे के जीवन में आना मंगलकारक हो इसीलिए विवाह में मंगलाष्टक का विधान किया गया है। और इस पूरे मंगलकार्य में मंगलकामना के रूप में मंगलाचरण और मंगलाचार मंगलसूचक होता है।

पत्नी प्रेम की प्रतिकृति होती है। वह पति की सहचरी बनकर उसे जीवन का आनंद प्रदान करती है। वह पति के मन में प्रेम का विश्वास होती है। वह पति की मंगलकामना के लिए व्रत, उपवास करती आस्था और श्रृद्धा होती है। वह पति के जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाकर पति के जीवन को सार्थकता प्रदान करती है। वह पति के जीवन में उम्मीद की किरण होती है। इसी उम्मीद के सहारे पति जीवन में आई चुनौतियों का सामना करने का संबल जुटा पाता है। राम ने इसी उम्मीद के सहारे रावण का सामना करने का संबल जुटाया था। भगवान शिव ने उसे अर्द्धांगिनी का दर्जा देकर पति के जीवन में पत्नी के महत्त्व को भलीभांति रेखांकित किया है। करवा चौथ और हरतालिका तीज पर पत्नी द्वारा रखा गया व्रत–उपवास अपने पति के प्रति उसके अगाध प्रेम और समर्पण का प्रतीक होता है। पति की सलामती के लिए पत्नी ईश्वर द्वारा सृजित मंगलकामना है।

# भुजलिया

भुजलिया कृषिप्रधान देश का प्रमुख पर्व है। कृषि भारतीय जीवन का आधार है। कृषि जल पर निर्भर होती है। अतः भुजलिया भूमि व जल देवता की अर्चना का पर्व है। यह पर्व एक ओर परस्पर प्रेम को प्रगाढ़ व दृढ़ करता है, भारतीय संस्कृति का दर्शन कराता है तो दूसरी ओर देह की क्षणभंगुरता का आभास भी कराता है। मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में पवारों द्वारा मनाया जाने वाला यह पर्व प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में अलग–अलग नाम से जाना व मनाया जाता है। भुजलिया पर्व आजीवन निर्वाह का दृढ़ पारिवारिक बंधन है जिसे दो परिवार परस्पर जीवन भर

निभाते और एक–दूसरे के सुख–दख में परस्पर भागीदार बनते हैं। यह बंधन स्वतः स्वीकार्य होने से सहज सरल व सरस होता है। नव विवाहिता अपने विवाह के बाद आए प्रथम रक्षाबंधन पर्व पर अपने मायके आकर भुजलियों की पूजा करती है और इसके विसर्जन के बाद अपने परिचितों–रिश्तेदारों के घर बॉस की टोकरी और भुजलिया लेकर जाती है। इस अवसर पर परिचित और रिश्तेदार नव विवाहिता को अपनी श्रद्धानुसार कपड़े–साड़ी आदि भेंट करके सम्मानपूर्वक विदा करते हैं।

ग्रामीण परिवेश से जुड़े होने के कारण गॉवों में आज भी संबंधों में प्रगाढ़ता व मधुरता लाने के लिए इस पर्व का सहारा लिया जाता है। गॉवों में परस्पर एक–दूसरे के प्रति जो सरलता,सहजता व सद्भाव दिखाई देता है उसके पीछे इस पर्व के प्रति गहन आस्था ही होती है। यह पर्व रक्षाबंधन के दूसरे दिन मनाया जाता है। नागपंचमी के दूसरे दिन श्रद्धानुसार टोकरी व दोनों में मिट्टी भरकर गेहूॅ बोए जाते हैं व उनपर पानी का छिड़काव किया जाता है। इन्हें बड़ी टोकरी में ढ़ककर रखा जाता हैं औेर आवश्यकतानुसार पानी छिड़काव कर पुनः बड़ी टोकरी में ढ़ककर रख दिया जाता हैं। रखाबंधन तक यही क्रम चलते रहता है। इससे गेहूॅ उगकर पौधों का रूप ले लेते हैं। हवा व प्रकाश न मिल पाने के कारण ये नन्हें पौधे जिन्हें जवारे भी कहा जाता है, पीले–पीले हो जाते हैं। इन्हें ही भुजलिया के रूप में पूजा जाता है और इस अवसर पर भुजलिया गीत गाए जाते हैं। रक्षाबंधन के दूसरे दिन अर्थात सावन पूर्णिमा की प्रतिपदा के दिन भुजलिया का समारोहपूर्वक विसर्जन किया जाता है। इन गीतों में भाई–बहन के परस्पर प्रेम व पारिवारिक जीवन का चित्रण होता है। नव विवाहिता अपने सिर पर भुजलिये की टोकरी रखकर गॉव के प्रतिष्ठित घरों में जाती है जहॉ भुजलिए का सम्मानपूर्वक पूजन किया जाता है और उस घर के बड़े–बूढ़े नव विवाहिता को आशीर्वाद व श्रद्धानुसार भेंट देते हैं। आगे–आगे शहनाई व बाजे वाले चलते हैं और पीछे–पीछे महिलाएं व नव विवाहिता भुजलिए लिए गीत गाते चलती हैं। इस तरह अनेक घरों से होते हुए



गोधुली वेला में भुजलिए गॉव की नदी पर विसर्जन हेतु ले जाए जाते हैं, जहॉ नव विवाहिता हॅसी–खुशी के साथ भुजलिए का विसर्जन करती हैं। विसर्जन के अवसर पर पूरे गॉव के लोग उपस्थित रहते हैं व इस पर्व के गवाह होते हैं। महिलाएं टोकनी में बोए इन भुजलियों को पानी की सहायता से मिट्टी से अलग कर व टोकनी की सफाई कर सिरोभाग को साफ टोकनी में रखकर अपने सिर पर रखकर अपने घर लाती हैं। पूजा उपरांत इसे मंदिर में चढ़ाकर एक–दूसरे के कान में खोंचा जाता है। इस प्रक्रिया में पूरा गॉव अपने गिले– शिकवे भुलाकर परस्पर एक–दूसरे को भुजलिया देते हैं और गले मिलते हैं। इस अवसर पर घर के सभी सदस्य अपने बड़े–बूढ़ों का आशीर्वाद लेते हैं।

इस पर्व का ऐतिहासिक महत्व भी है। ऐसा माना जाता है कि इस पर्व का संबंध आल्हा–उदल से है। जगनिक के आल्हा खंड में भुजलिए की लड़ाई का वर्णन है जिसमें मुॅहबोली बहन चन्द्रावली भुजलिया विसर्जन के लिए कीर्तिसागर जाती है जहॉ से पृथ्वीराज चौहान अपने पुत्र के लिए उसका अपहरण करना चाहता है। चन्द्रावली इस अवसर पर अपने मुॅहबोले भाई आल्हा से सहयोग का अनुरोध करती है और आल्हा बहन के अनुरोध पर साधु के वेष में पहुॅचकर सेना से सामना कर चन्द्रावली को भुजलिया विसर्जन उपरांत सफलतापूर्वक वापस ले आता है।

भुजलिया पर्व मनाने के पीछे वैज्ञानिक कारण भी है। रबी की फसल के लिए किसान इन बीजों को बोकर उनकी जॉच करके देख लेते हैं कि बीज बुआई के उद्देश्य से उपयुक्त है भी या नहीं। भुजलिये को किसान आगामी रबी फसल के पूर्वाभास के रूप में देखते हैं। भुजलिए अच्छे होने की दशा में किसान अपने घर में भंडारित अनाज को बेचने के लिए निकाल देते हैं और भुजलिए ठीक न होने पर भंडारित अनाज को भविष्य में उपयोग के लिए संग्रहित करके रख लेते हैं।

भुजलिया पर्व का आध्यात्मिक महत्व भी है। भुजलिए हवा व धूप के अभाव में पीले–पीले व नरम रहते हैं। इनसे फसल की अपेक्षा नहीं

की जा सकती। हवा व धूप के अभाव में जीवन के वास्तविक संघर्ष से बेखबर भुजलिए सहज व सामान्य (प्राकृतिक) विकास से दूर रहते हैं। इस तरह भुजलिए से यह सीख मिलती है कि जीवन में उन्नति और विकास के लिए संघर्ष जरूरी है। धूप और हवा का स्वाद चखना जरूरी है। नन्हा पौधा धूप, हवा, आँधी, तूफान, सर्दी, गर्मी सहकर ही विशाल वृक्ष बनता है। वही व्यक्ति जीवन में उन्नति व विकास करता है जो संकटों से जूझता है, बहादुरी से संघर्ष करता है। भुजलिया देह की क्षणभंगुरता का भी आभास कराता है। नागपंचमी से रक्षाबंधन तक की लघु जीवन यात्रा के माध्यम से भुजलिए यह सीख देते हैं कि मानवीय देह भी भुजलिए की तरह ही क्षणभंगुर है। भुजलिये की विदाई की तरह एक दिन इसकी भी विदाई होगी और मानव की विदाई पर भी एक दिन ऐसा ही जलसा होगा। भुजलिए को सिर पर ले जाने की तरह एक दिन उसे भी किसी के कंधों पर ले जाकर विसर्जित कर दिया जाएगा।

इस तरह भुजलिया मिट्टी, पानी और परस्पर प्रेम की पूजा का पर्व है। जमीन से जुड़ा यह पर्व आज भी उतना ही सार्थक है जितना कि उसके अपने जन्म के समय।

## मंडपाच्छादन : एक वैज्ञानिक रस्म

मंडपाच्छादन बैतूल जिले की एक प्रमुख वैवाहिक रस्म है। मंडप की यह रस्म कई कुटीर उद्योगों को पलने–बढ़ने का अवसर प्रदान करती है, साथ ही इससे जुड़े लोगों को रोजी–रोटी मुहैया कराती है। कोटवार का तोरण बॉधना, बुनकर द्वारा छिंद का सेहरा बुनना, महिलाओं द्वारा सूपा लिखना, बसोड़ का छिबला,सूपा व टोकरी देना, नाई का दोना–पत्तल देना,व दुल्हे के बाल निकालना,महिलाओं का समूह में जाकर खनमिट्टी लाना, समूह में गीत गाना व मंडप छाबना, जवाई द्वारा मुंडा–मुंडी व खम्बों को कंधा देना व घरवालों द्वारा उन सबकी पूजा करना, गाड़ने के पूर्व मुंडा–मुंडी की पूजा करना, बहन–जवाई द्वारा मंडप सुतना, मंडप डालने में सहयोग करने वालों को मंडप में रोटी खिलाना,मंडप में दुल्हे–दुल्हन को हल्दी लगाना व काकण बॉधना,



जवाई द्वारा सील–लोढ़ा लेकर आना व नेंग मॉगना,काकण तोरण उजाना आदि कई रोचक और दिलचस्प रस्मों का होना परस्पर प्रेम व संबंधों को प्रगाढ़ता प्रदान करता है।

मंडप हेतु मुडा–मुंडी व पालवी लाने के पूर्व संबंधित पेड़ों को एक दिन पूर्व न्यौता देना व उनकी पूजा करके ही कुल्हाड़ी चलाना पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का द्योतक है। जिस बैलगाड़ी में लादकर मुडा–मुंडी व पालवी लाई जाती है उस गाड़ी को खींचने वाले बैलों पर केन्द्रित गीत गाना उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना है।

दुल्हे का मंढा मारना,दुल्हे–दुल्हन का मंडप में पड़छा जाना,बारिश के छींटे पड़ने पर ही मंडप उजाना आदि रस्में विवाह संस्कार को और अधिक समृद्ध करती है।

कृषि प्रधान समाज होने के कारण रबी की फसल आने पर चैत, वैशाख, जेठ, आषाड़ महिनों में सामान्यतः विवाह सम्पन्न किए जाते हैं। ये महिनें गर्म होते हैं, अतः गर्मी से राहत पाने के लिए मंडप का प्रचलन अस्तित्व में आया प्रतीत होता है। सामान्यतः घरों में ऑगन का प्रावधान होने से विवाह, पूजा–पाठ आदि सामाजिक, धार्मिक अवसरों पर मेहमानों के बैठने–उठने व गर्मियों में रात्रि विश्राम के लिए काफी सुविधा होती है। हर सुख–दुख के अवसरों का ऑगन गवाह होता है। ऑगन में ही मॉ सिखाती, ऑगन पहली शाला है,गिरकर उठना,उठकर गिरना बच्चा ऑगन में सीखता है।

ऑगन में मंडप डालने से विवाह कार्यक्रम में पधारे मेहमानों के लिए बैठने,आराम करने व ज्यौनार तथा पंगत हेतु विशेष स्थान की व्यवस्था हो जाती है। मंडप छाने में पत्तेदार टहनियों (पालवी) का उपयोग करने से धूप से रक्षा होती है और हरे पत्ते होने से गर्म हवा भी उनके सम्पर्क में आने से ठंडी हो जाती है। पालवी के कारण घर का धुँआ व कार्बन डाइआक्साइड आसानी से बाहर निकल जाता है जिससे घर के वातावरण को सामान्य व स्वस्थ बनाए रखने में मदद मिलती है। इस तरह गर्मी में भी मंडप घर को ठंडा रखने में मदद करता है। मंडप के

नीचे स्थित स्थान को गीली मिट्टी से छाबने की प्रथा है। गीली मिट्टी के कारण मंडप और घर का वातावरण ठंडा बना रहता है। विवाह अवसर पर पधारे मेहमान जब ठंडी मिट्टी के सम्पर्क में आते हैं तो उनकी यात्रा की थकान और तनाव दोनों को घटाने में ठंडी मिट्टी कमाल का काम करती है। उल्लेखनीय है मंडप में कदम रखने के पूर्व मेहमानों के पैर धुलाने की रस्म होती है जिसमें मेजबान पक्ष का एक व्यक्ति मेहमान के पैरों पर ठंडा पानी डालता है और दूसरा व्यक्ति अपने हाथों से हौले–हौले उसके पैर धोता है। इस प्रक्रिया से समस्त मेहमान गुजरते हैं। यह प्रक्रिया मेजबान के अंहकार को गलाने में महती भूमिका निभाती है। यह प्रक्रिया अतिथि देवो भवः को चरितार्थ करती है। इससे मेहमान और मेजबान दोनों को आदर व प्रेम की अनुभूति होती है तथा इससे दोनों पक्षों के बीच संबंधों में मधुरता तथा प्रगाढ़ता आती है। मंडपाच्छादन के अवसर पर गाए जाने वाले गीत अभी भी गॉवों में प्रचलन में हैं। ये गीत आज भी अपना प्रभाव जन मानस पर छोड़े बिना नहीं रहते।

मंडप डालते समय गाया जाने वाला गीत–
कहॉ सी लायो हरद्या मोंगर
कहॉ सी लायी नांगन बेलनी वो
हमरा राजकुँवर घर मांढोड़
कौन सा बइल प लायो हरद्या मोंगर
चौर्‍या बइल प लायो हरद्या मोंगर
कौनसा बइल प लाई नांगन बेलनी वो
हमरा राजकुँवर घर मांढोड़
मंडप डालते समय गाया जाने वाला एक अन्य गीत–
आरु जाजे कोयल बाई बलखंड
आरु जाजे कोयल बाई बलखंड
आरु लाजे वो जामुन की खोज
धनुती बोलय कोयल
आरु जामुन जो कहे मैं बड़ी



आरु मोहे बिन मंडप नी शोभय
धनुती बोलय कोयल
मंडप सूतते समय गाया जाने वाला गीत–
मंढा सूतन की बखत भई वो नारी मंझारी
मंढा सूतन की बखत भई वो नारी मंझारी
सवास्या कोन देव वो नारी मंझारी
सवास्या गोरे देव वो नारी मंझारी
सवासिन कोन बाई वो नारी मंझारी
सवासिन हीरा बाई वो नारी मंझारी
खनमिट्टी लाते समय गाया जाने वाला गीत–
आरु जाजे कोयल बाई बलखंड
आरु जाजे कोयल बाई बलखंड
आरु लाजे वो मट्टी की खोज
धनुती बोलय कोयल
मट्टी बोली मेरो बिन मंडप नी शोभय
धनुती बोलय कोयल।
कांकण बॉधते समय गाया जाने वाला गीत–
लुगड़ा धोती को दियो वो इनाम
हरि जो सखि न कांकण बॉध्या
काको दियो वो इनाम
हरि जो सखि न कांकण बॉध्या

## बारात झेलना

विवाह की एक प्रमुख रस्म है बारात झेलना। बारात झेलने से अभिप्राय है बारात का स्वागत करना। परन्तु कई बार बारातियों के नाज नखरे इतने बढ़ जाते हैं कि इन्हें झेलना वधू पक्ष की मजबूरी हो जाता है। सभवतः इसी कारण इस रस्म का नाम ही बारात झेलना पड़ गया। बारात सामान्यतः गॉव के बाहर गौठान (गाय आदि को एकत्रित करने का मैदान/स्थान) या मंदिर प्रागंण में झेली जाती है। यह स्थान गॉव

के बाहर होने और खुला तथा बड़ा होने के कारण सुविधाजनक होता है। दूर से चलकर आने के कारण व्यक्ति थका मॉदा होता है और रास्ते में किसी अप्रत्याशित घटना का सामना होने के कारण बाराती गुस्से में हो सकते हैं, इसी मनोवैज्ञानिकता के चलते बारात गॉव के बाहर झेलने की प्रथा चल पड़ी। यदि कुछ थोड़ा बहुत ऊँचनीच भी हो भी जाए तो उसे गॉव के बाहर ही सुलझा लिया जाए उसे गॉव में न लाया जाए ताकि गॉव में वधू पक्ष का मान–सम्मान बना रहें। इस अवसर पर सर्वप्रथम बारातियों को ठंडा पानी पिलाये जाने की रस्म है। वर पक्ष से बारात में पधारी महिलाओं के पैर भी पखारे जाते हैं। वधू पक्ष की महिलाएँ पूरे गाजे–बाजे व सम्मान के साथ अपने सिर पर पानी का गुंड रखकर ले जाती है तथा बारातियों को ठंडा पानी पिलाकर रास्ते की उनकी थकान हरती हैं ताकि शेष सभी रस्में सामान्य स्थिति में सम्पन्न हो सकें। वर पक्ष से पधारे वरिष्ठ व सम्मानीय सदस्यों को टीका लगाये जाने और हार पहनाए जाने के बाद उनका मुँह मीठा कराया जाता है। श्रृद्धानुसार शाल–श्रीफल आदि भेंट कर उन्हें पान के बीड़े खिलाये जाते हैं। वर और वधू दोनों पक्ष के लोग आपस में गले मिलकर एक दूसरे का स्वागत और सम्मान करते हैं।

वधू पक्ष को वर पक्ष की बारात को झेलना पड़ता है। उसकी हर खट्टी–मिट्ठी बातों को कभी मजबूरन तो कभी जानबूझकर झेलना पड़ता है। ऐसे अवसर पर वर पक्ष के बारातियों के नाज–नखरे भी वधू पक्ष को झेलने पड़ते हैं। बारातियों के इस स्वभाव के कारण ही इस रस्म का नाम बारात झेलना पड़ गया। बारात झेलने का अभिप्राय बारात की अगवानी कर उन्हें ससम्मान जनवासा में लाना होता है। बाराती जनवासे में थोड़ा सुस्ता ले तब तक वर–वधू से संबंधित अन्य रस्में पूरी कर ली जाती है। जनवासे में प्रत्येक व्यक्ति के पैर धुलाए जाते हैं ताकि पैर धोने के साथ ही उनकी थकान धूल जाए उनका गुस्सा धूल जाए और विवाह की प्रमुख रस्म पाणिग्रहण संस्कार पूरे सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो जाए।



# मरी माय

मरी माय को शीतला माता भी कहा जाता है। शीतला माता को पौराणिक देवी माना जाता है। स्कंधपुराण में शीतला स्त्रोत उपलब्ध हैं। चेचक की देवी के रूप में इसका पूजन–आराधन किया जाता है। इसे मरी माय के नाम से जाना जाता है।

इसके मंदिर प्रागंण में सामान्यतः नीम का पेड़ अनिवार्यतः पाया जाता है। मंदिर न होने पर कहीं–कहीं इसे नीम के पेड़ के नीचे स्थापित कर दिया जाता है। हर गॉव में मरी माय का एक पूजा स्थल/मंदिर अनिवार्यतः पाया जाता है। इसकी कोई मूर्ति नहीं होती अपितु गार पत्थर जिसमें चेचक की तरह दाने होते हैं को ही मरी माय के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया जाता है। इस तरह के पत्थर प्रायः गॉवों में उपलब्ध बर्रों (लाल मिट्टी के खेत) में मिल जाते हैं।

पवारी लोक मानस/संस्कृति में कोई भी रोग किसी न किसी देवी–देवता के निर्मित होते हैं। देवी–देवता जब किसी से रूष्ट हो जाते हैं तो वे अपना प्रकोप रोग के रूप में व्यक्त करते हैं। अतः रोगी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए संबंधित देवी–देवता की पूजा–अर्चना का आज भी गॉवों में प्रचलन है। शीतला के रूष्ट होने से चेचक रोग फैलने की आशंका से ही इसकी पूजा–अर्चना की जाती है। प्रायः चेचक गर्मी में निकलती है। अतः इसके पूजन का विधान भी हिन्दी चैत मास की सप्तमी–अष्टमी को रखा गया है। ऐसा माना जाता है रोगी को गरम खाना देने से चेचक का रोग भंयकर रूप ग्रहण कर लेता है। इस कारण रोगी को प्रायः ठंडा और बासी भोजन ही दिया जाता है। चेचक आने पर रोगी के शरीर का तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है। परंतु फिर भी इसे शीतला कहकर पुकारने के पीछे यह भाव सदैव बना रहता है कि रोगी के शरीर का तापमान सामान्य बना रहे। ज्वर के तेज होने पर भी संबंधित देवी को शीतला कहकर पुकारने से उसके प्रकोप का भाजन न बनने की ही मंशा काम कर रही होती है। यह सामान्य जीवन में भी देखने में आता है कि यदि किसी गुंडे–बदमाश को आदर के साथ

संबोधित किया जाए तो वह अपना बुरा असर दिखाने में सकुचाता है।

ऐसी मान्यता है कि शीतला की सवारी गधा है। इसीलिए रोगी को गधी का दूध पिलाए जाने की भी प्रथा है। इसमें रोग के विषाणु नष्ट करने की क्षमता का होना माना जाता है। शीतला को चावल की खीर पसंद है। अतः शीतला को इसी का भोग लगाये जाने की प्रथा है। इसकी पूजा में शीतला पर लोटे से जल चढ़ाया जाता है और लोटे में बचे जल को रोगी पर छिड़का जाता है। नीम की टहनी या पत्तियॉ घर के छप्पर में खोंची जाती है और बिस्तर पर भी रखी जाती है। इससे बाहर की गर्म हवा भी पत्तों के स्पर्श से ठंडी होकर मरीज तक ठंडी हवा पहुॅचती है और रोगी को राहत मिलती है। रोगी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु मरी माय की पूजा करना, नीम पहनने या गाड़ा खींचने का संकल्प लिया जाता है। हिन्दी चैत मास में हर वर्ष गॉवों में नीम पहनने और गाड़ा खींचने के दृश्य आम होते हैं।

विवाह के अवसर पर भी मरी माय अर्थात शीतला की पूजा की जाती है। वर–वधू द्वारा गॉव की शीतला माता का आशीर्वाद लेना विवाह की एक अनिवार्य रस्म होती है। इस प्रकार शीतला माता बच्चों की संरक्षिका मानी जाती है। बॉझ स्त्रियॉ पुत्र प्राप्ति के लिए भी इसकी पूजा करती है।

## शस्त्र पूजा

शस्त्र बिना क्षत्रिय की कल्पना नहीं की जा सकती। क्षत्रियों की शोभा शस्त्रों से होती है। जिस प्रकार अलंकारविहीन स्त्री शोभा नहीं देती, उसी प्रकार शस्त्रों के बिना क्षत्रिय शोभा नहीं देते। भारतीय जीवन दर्शन में वर्णित सभी देवी–देवताओं के भी कोई न कोई अस्त्र–शस्त्र दिखाए गये हैं जो समय आने पर उनका उपयोग किया करते थे। समय के साथ–साथ अब उक्त धारणा बदलती जा रही है। अब युद्ध लड़ने के तरीकों में बदलाव आ गया है। अस्त्र–शस्त्रों के उपयोग में बदलाव आ गया है। राजतंत्र की जगह अब लोकतंत्र होने से बात–बात में लड़ाई होने की संभावना घट गई है। वाकचातुर्य होने पर अब अस्त्र–शस्त्रों की



उतनी जरूरत भी नहीं पड़ती। पवार क्षत्रिय धर्म के पालनहार और संरक्षक होने के कारण उनकी एक वीर संस्कृति रही है। इसी वीर संस्कृति के द्योतक के रूप में पवारों में दशहरे पर शस्त्र पूजा की जाती है। दशहरे की पूजा में घर में उपलब्ध सभी अस्त्र–शस्त्र हॅसिया, कुल्हाड़ी, बल्लम, बर्छी, तलवार आदि को एक निश्चित पूजा स्थान पर सम्मान के साथ रखकर उनकी पूजा की जाती है। अब समय के साथ–साथ अस्त्र–शस्त्रों के स्थान पर कृषि कार्य में उपयोग में लाए जाने वाले औजारों यथा–लोहे से निर्मित पास, कोंढरा, पिराना, हॅसिया, कुल्हाड़ी, बसोला, आरी आदि की पूजा की जाने लगी है। शस्त्र पूजा बलि मॉगती है। अतः प्रतीकात्मक रूप से पूजा हेतु किसी सब्जी जैसे गिलगी, तुरई आदि को चार टॉग लगाकर उसकी बलि दी जाती है।

## कर : करके सीखने का पर्व

आजीविका का एकमात्र साधन कृषि होने के कारण कृषि से संबंधित पर्व की ही पवारों में बहुलता पाई जाती है। पोला पर्व बैलों से जुड़ा पर्व है जिसमें बैलों को उस दिन सजाया संवारा जाता है। उस दिन कृषि कार्य बंद होते हैं। बैलों से किसी तरह का काम नहीं लिया जाता। ठीक पोले के दूसरे दिन याने कि पोले के एक दिन बाद गॉव में कर खेली जाती है। इस दिन गॉव के सभी बच्चे, युवा और बड़े–बूढ़े जुआ खेलते हैं। यह सुबह से प्रारंभ होकर देर रात तक खेला जाता है। यह जुआ न होकर एक तरह से मनोरंजन होता है। इसमें व्यक्ति शामिल होकर और खेलकर हार–जीत का मजा चखता है। हार से होने वाले दुख और जीत से होने वाली खुशी से वह परिचित होता है और वास्तविक जीवन में होने वाली हार–जीत को सहने के लिए अपने आप को तैयार करता है। जीवन में हार–जीत का अनुभव न होने पर सामान्यतः व्यक्ति जीवन में ऐसे अवसर आने पर इसके लिए तैयार न हो पाने के कारण इस तरह के अनुभवों को झेल पाने में सक्षम नहीं होते और घबराकर जल्दीबाजी में इस तरह के कदम उठाने के लिए मजबूर हो जाते हैं जो मानवजीवन के लिए घातक भी हो सकते हैं। अतः कर

का पर्व लोगों को करके सीखने व जीवन के लिए तैयार करने में मदद करने वाला ऐसा अनूठा पर्व है जो जीवन में आई अनुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह की परिस्थितियों का साहस के साथ सामना करने के लिए आधारभूमि तैयार करता है। करके सीखने पर आधारित यह पर्व किताबी ज्ञान के स्थान पर जमीन से जुड़े अनुभवों को मान्यता प्रदान करता है और महज रटने की जगह करके देखने में विश्वास करता है।

## जल पूजा का विधान

संकल्प से लेकर श्राप, श्राद्ध से लेकर आचमन, तर्पण से लेकर भावांजलि और षोड्शोपचार से लेकर चरणामृत तक जल के ही विधान हैं। कोई भी धार्मिक कार्य जल के बिना सम्पन्न हो पाना संभव नहीं। चाहे वह सत्यनारायण की कथा हो चाहे विवाह, हवन आदि रस्में सब जल बिना अधूरी मानी जाती है। नई–नवेली दुल्हन द्वारा कुऑ पूजन की रस्म किए बिना विवाह की रस्म पूरी नहीं हो पाती। कन्या द्वारा बोए गए भुजलिए नदी जल में ही उजाए जाते हैं। गणेश और दुर्गा की प्रतिमाएं नदी–तालाब के जल में ही सिराई जाती हैं। नदी के किनारे ही मानव संस्कृति जन्मी एवं पनपी है। अंतिम संस्कार भी किसी नदी किनारे ही किए जाने की प्रथा है। और तो और मृतक के फूल भी किसी नदी में ही सिराने पर संबंधित को मुक्ति मिलने की कामना की जाती है। पानी न आने पर भी चिंतित जन बारिश लाने के लिए कई तरह के टोटके करते हैं। मेंढक व मेंढकी का विवाह करना, मेंढक को पकड़कर बच्चों द्वारा घर–घर लेकर जाना और संबंध्ति घर के सदस्यों द्वारा उसपर पानी डालने की क्रिया करना, वस्त्रविहीन होकर महिलाओं द्वारा हल चलाना आदि रस्में आज भी गॉवों में देखी जा सकती है। धूप तपने और साथ–साथ पानी आने पर गॉवों में ऐसी मान्यता है कि इस अवसर पर सियार–सियारिन का विवाह होता है। कहा भी जाता है–घाम तपय पानी आवय, कोल्ह्या–कोल्हीन को बिहा होय। नदी और कुए को लेकर कई लोकगीत प्रचलित हैं। ये लोकगीत पानी की महिमा का बखान करते हैं। पानी को लेकर कई लोकोक्ति एवं मुहावरें भी प्रचलित हैं–मुंढा



प पानी नी होनूँ, करे कराए पर पानी फेर देना, पानी–पानी होना, चेहरे पर पानी नहीं होना, चुल्लू भर पानी में डूब मरना, हनुमान पर पानी चढ़ाना आदि। मालवा की समृद्धि का बखान ही "पग–पग रोटी, डग–डग नीर" कहकर किया जाता था। पानी की बचत हेतु भी कहा जाता है कि पानी के अपव्यय से न लक्ष्मी रहती है, न कार्य करने की शक्ति होती है न घर में शांति आती है, न ही समृद्धि। ऐसी भी मान्यता है कि ईशाण कोण में जल का संग्रह करने से परिवार में समृद्धि आती है।

जल स्रोतों विशेषकर नदी के प्रति जनमानस में इतना सम्मान समाया हुआ है कि राह चलते भी नदी मिलने पर श्रृद्धाभावना स्वरूप पानप्रसाद जरूर अर्पित किया जाता है।

## दुख के अवसर पर रोटी खिलाना

किसी समाज सदस्य के घर गमी होने पर गॉव के अन्य समाज सदस्यों द्वारा मृतक के परिजनों को रोटी खिलाने की परम्परा है। मृतक के अंतिम संस्कार के बाद ही गॉव के रिश्तेदार या परिचित जन अपने घर भोजन पकाकर ले जाते हैं और शोकाकुल परिवार के सदस्यों को अपने साथ बिठाकर भोजन कराते हैं। इस तरह सहानुभूति एवं समानुभूति का प्रदर्शन पूर्णतः मनोवैज्ञानिक होता है। गॉव के लोगों की उपस्थिति से शोकाकुल परिजनों को ढॉढस बॅधाने व अपना दुख बॉटने में मदद मिलती है। दुख के अवसर पर अपनों की उपस्थिति ही संबल होती है। दुखी व्यक्ति जब दुखी मन से भोजन पकाता है तो वह भोजन स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं माना जाता। इसलिए गॉवों में यह प्रयास किया जाता आत्मा की शांति के लिए संपादित हवन–पूजन व भोजन क्रिया ) या "दसवा"(विवाहित व्यक्ति की मृत्यु पर दसवे दिन मृतक की आत्मा की शांति के लिए संपादित हवन–पूजन व भोजन क्रिया) होते तक बारी–बारी से लोग सुबह–शाम भोजन पहॅुचाते रहते हैं ताकि शोकाकुल परिजनों को चूल्हा न जलाना पड़े। दुख के समय वैसे भी व्यक्ति सामान्यतः भोजन पकाकर खा पाने की स्थिति में नहीं होता। अतः दुख

के अवसर पर शोकाकुल परिवार के सदस्यों को रोटी खिलाना पूर्णतः मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। जो दुखी नहीं है उनकी उपस्थिति दुखी लोगों के दुख दूर करने का माध्यम बनती है। उनके सुख दुखियों का दुख हटा भले ही न पाए पर कुछ हद तक घटा जरूर देते हैं। यही कारण है दुख के अवसर पर शोकाकुल परिवार के सदस्यों का दुख बॅटाने व घटाने के उद्देश्य से "तीसरा" व "दसवा" जैसे कार्यक्रम प्रचलन में आए जिसमें बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होकर शोकाकुल परिवार के सदस्यों को अपनी उपस्थिति से यह अहसास कराते हैं कि दुख की इस घड़ी में वे अकेले नहीं हैं अपितु पूरा समुदाय उनके साथ हैं।

यहाॅ यह भी उल्लेखनीय है कि "दसवा" जैसे कार्यक्रमों पर मृत्यु भोज नहीं दिया जाता था अपितु रिश्ते–नाते के लोग अपने साथ आटा, दाल, चावल, नमक, मिर्च आदि लेकर जाते थे जिन्हें एकत्रित कर सामूहिक रूप से भोजन पकाया व खाया जाता था। इस रस्म के पीछे यही भाव छिपे होते थे कि शोकाकुल परिवार के सदस्यों पर इस दुख के अवसर पर किसी तरह का भार न आए और जन समुदाय भी उनके दुख बॅटाने व घटाने के उददेश्य से ही उपस्थित हुआ है। परंतु समय के साथ यह प्रथा बिगड़ती चली गई और उसने मृत्यु भोज का रूप ग्रहण कर शोकाकुल परिवार के शोक को घटाने के स्थान बढ़ाने का ही काम ज्यादा किया है। हम अपने पूर्वजों की डाली गई स्वस्थ परम्परा को अपनाकर पुनः अपने मनोवैज्ञानिक आचरण को स्थापित कर जनहित का काम कर सकते हैं और एक गलत चली आ रही है परिपाटी को जड़ से उखाड़कर फेंकने में जन समुदाय को मदद कर अपनी स्वस्थ मानसिकता का परिचय दे सकते हैं। ऐसे काम भीड़ से नहीं होते। ऐसे कामों के लिए साहस की जरूरत होती है और भीड़ में से निकलकर किसी को बाहर आना होता है।



# शक्ति और प्रकृति का पर्व : जिरोती

शक्ति और प्रकृति का पर्व जिरोती हरियाली अमावस्या पर मनाया जाता हैं। इस दिन रात्रि में विशेष तौर पर मातृ कुल देवियों की पूजा की जाती है। पवार मातृशक्ति पूजक हैं। यह उनके व्यवहार में भी प्रदर्शित होता है। व्यावहारिक जीवन में, पिता व भाई बेटी तथा बहन के मामा अपनी भांजी के और काका अपनी भतीजी के पैर छूकर आशीर्वाद लेते हैं। वास्तव में,यह बेटी में मातृशक्ति के दर्शन करना है। व्यावहारिक जीवन में, बेटी, भतीजी और भांजी के प्रति इतना सम्मान अन्य किसी समाज में दिखाई नहीं देता।

इस दिन दिवारों पर जीवन के विविध रंगों को उकेरा जाता है। चूँकि भारत मुख्यतः कृषिप्रधान देश है, अतः जिरोती में भी इस व्यवसाय से जुड़े चित्रण ही प्रमुख होते हैं। सेम के पत्तों को पीसकर हरा रंग और चावल को पीसकर सफेद रंग बनाया जाता है। इनकी सहायता से घर की दिवारों पर जिवती लिखी जाती है। एक तरह से यह अल्पना ही होती है जिसे पवारी बोली में "अयपन" कहा जाता है। इस दिन प्रातःकाल से ही लोहार घर–घर जाकर घर के मुख्य दरवाजे की फ्रेम पर कील ठोंकता है। इन कीलों को गिनकर घर की प्राचीनता का अनुमान लगाया जा सकता है। यह एक कील एक वर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। उन दिनों लिखित में इतिहास न होने के कारण लोग इस तरह के अमानक तरीके प्रयोग में लाया करते थे।

हरियाली अमावस्या के दिन मनाया जाने वाला यह पर्व प्रकृति के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करने का पर्व है। प्रकृति भी हरी साड़ी में लिपटी किसी नई–नवेली दुल्हन की तरह आकर्षक लगने लगती है। इस दिन से लोग अपने पशुओं को स्वतंत्र चरने हेतु जंगल में छोड़ देते थे। चूँकि अब जंगल सिमटते जा रहे हैं, अतः अब इस तरह की प्रथा कम ही देखी जाती है। कृषि कार्य में ट्रैक्टर के आगमन और बढ़ते प्रयोग से भी अब पालतु पशुओं के प्रति लोगों का रूझान घटने लगा है।

# विवाह पूर्व हल्दी लगाना

विवाह पूर्व दुल्हे–दुल्हन को हल्दी लगाना एक रस्म है। हल्दी स्वास्थ्यवर्धक होती है। इसके लगाने से चर्म रोग आदि ठीक हो जाते है। इस रस्म के पीछे मूल भावना यही होती है कि दुल्हे–दुल्हन नीरोगी रहे। घर परिवार के अन्य सदस्यों और परिजनों द्वारा हल्दी लगाने के पीछे भी यही भावना होती है कि वे स्वस्थ रहें व उनके सम्पर्क में आए अन्य सदस्य भी स्वस्थ रहें। हल्दी लगने के बाद सामान्यतः दुल्हे–दुल्हन को कहीं भी अकेले जाने की मनाही होती है। ऐसा माना जाता है कि हल्दी लगा शरीर बुरी आत्माओं की पहली पसंद होती है। इसीलिए हल्दी लगने के बाद से घर का कोई न कोई सदस्य दुल्हे–दुल्हन के साथ अवश्य उपस्थित रहता है। हल्दी की रस्म पूरी होने पर दुल्हे–दुल्हन को मंडप में स्नान कराया जाता है। लोकगीत में गरीब की बेटी भी दूध से स्नान करती है और उसके इस स्नान से मंडप में कीचड़ हो जाता है। लोकगीत के बोल प्रस्तुत है–

कोन बड़े की नांदन बेटी,  
सवा घड़ा दूध नाह्यो वो।  
अंगना में चिक्खल सखी,  
किसने किया वो।

# पितरों का आवाह्न

पुराणों में पितरों के प्रति सम्मान भावना के श्लोक मिलते हैं। ऐसा माना जाता है कि एक पितर लोक ही पृथक से अस्तित्व में है। अपने परिजनों के हर कृत्यों पर उनकी नजर रहती है। अपने परिजनों के हर अच्छे कार्य उन्हें आत्मिक शांति प्रदान करते हैं। वे पितर लोक से ही अपने परिजनों को आशीर्वाद देते रहते हैं। विवाह आदि शुभ अवसरों पर पितरों का आवाह्न कर उनका आशीर्वाद लिये जाने की परम्परा है। पितरों के आवाह्न व उनकी पूजा अर्चना के लिए समय व दिन निर्धारित होता है। पितरों के आवाह्न व पूजा अर्चना अवसर पर उनके सम्मान में



गीत गाए जाने की प्रथा है। गीत बड़े कारूणिक होते हैं। इस समय पूरे घर का वातावरण कारूणिक हो उठता है। अपने पितरों की अच्छाइयों को याद करके सबका मन भर आता है। गीत में पितरों के नाम ले लेकर उनका आवाह्न किया जाता है और उनसे खुशी के इस अवसर पर शामिल होने व आशीर्वाद देने की कामना की जाती है। इस अवसर पर पवारों में पितरों के आवाह्न हेतु जो गीत गाया जाता है उसकी एक बानगी यहॉ प्रस्तुत है।

उतरो उतरो रे सर्ग का देव पित्तर  
उतरो उतरो रे सर्ग का देव पित्तर  
तुम्हारो कारण तुम सारो  
उतरो उतरो रे सर्ग का देव पित्तर

सर्ग की बाट या औघड़  
हम्मारो आनो नी होत  
तुम्हारो कारण तुम सारो  
हम्मारो आनो नी होत

उतरो उतरो रे सर्ग का देव पित्तर  
तुम्हारो कारण तुम सारो

# आत्मा की विदाई का पर्व : तेरव्ही

अंतिम संस्कार शरीर की विदाई का अंतिम पर्व है। तेरव्ही आत्मा की विदाई का औपचारिक पर्व है। कहते है, मृत्यु के बाद जीवात्मा 11 दिनों तक पृथ्वी पर ही विचरण करती रहती है। वह तेरव्ही के समापन के बाद पृथ्वी लोक से पितर लोक को प्रस्थान करती है। तेरव्ही पर जनसमुदाय मृतक के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के उद्देश्य से उपस्थित होता है। इस अवसर पर मृतक की अच्छाइयों को याद करके उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। व्यक्ति चला जाता है पर उसकी अच्छाइयॉ रह जाती है। व्यक्ति की अच्छाइयॉ उसकी अनुपस्थिति में भी जीवित रहें इसलिए तेरव्ही पर व्यक्ति की अच्छाइयों पर प्रकाश डाला जाता है और उन्हें आत्मसात् करने का प्रयास किया जाता है।

तेरव्ही पर जन समुदाय को अपने आगे के जीवन को जीने के लिए उद्देश्य तय करने का एवं अपने जीवन को परिमार्जित करने का एक अवसर मिलता है। उपस्थित जन अपने जीवन को और अधिक सुंदर बनाने का प्रयास करने का संकल्प ले सकते हैं। वे अपने जीवन को लोक कल्याण हेतु लगाने का संकल्प ले सकते हैं। तेरव्ही पर उपस्थित जनसमुदाय थोड़ी देर के लिए ही सही पर इतना जरूर सोचने का प्रयास करें कि मानलो आप मर गए हैं। आपका शव ऑगन में रखा हुआ है। आपकी पत्नी, आपके बच्चे रो रहे हैं। आपके भाई–बहन रो रहे हैं। आपके रिश्तेदार रो रहे हैं। आपके गॉव मोहल्ले–पड़ोस के लोग बैठे हुए आपके बारे में बातचीत कर रहे हैं। इस अवसर पर आप उनसे क्या सुनना चाहेंगे? जो आप उनसे अपने बारे में सुनना चाहेंगे वही काम हम आज से करना शुरू कर दें यह सबक हम तेरव्ही पर सीखकर तेरव्ही के आयोजन को, अपनी उपस्थिति को और अपने जीवन को और अधिक सार्थक कर सकते हैं, और अधिक धन्य कर सकते हैं।

विवाह अवसर पर अहीर प्रथा एवं तेरव्ही के अवसर पर शोकाकुल सदस्यों को पगड़ी या तौलिया आदि ओढ़ाने की प्रथा अपना मूल अर्थ खोते जा रही है। इस अंधानुकरण के कारण हमारे कई गरीब रिश्तेदार



हमारे दुख में इसलिए शामिल नहीं हो पाते कि इस रस्म अदायगी के लिए वे सक्षम नहीं होते। इस अवसर पर सबकी उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए केवल अग्नि देने वाला एक व्यक्ति प्रतीकात्मक रूप से किसी एक व्यक्ति से तौलिया आदि ग्रहण कर इस कुप्रथा को सीमित करके समाज को राहत दिलाने का प्रयास कर सकता है। वास्तव में, उपस्थित जन समुदाय मृतक के परिजन को तौलिया आदि तो प्रतीकात्मक रूप से ओढ़ाता है। इसके माध्यम से वह संबंधितों को उत्तरदायित्व सौंपता हैं। वह अपेक्षा करता है कि इस घर–परिवार की संस्कृति पूर्ववत जारी रखने का दायित्व अब आप पर है। घर की बहन–बेटियों,भांजियों के लिए घर के दरवाजे सदैव खुले रहने चाहिए। उनके सुख–दुख में आप सदैव उनका साथ देवे। सभी रिश्ते नाते के लोगों का पूर्ववत सम्मान जारी रहे। इसी अपेक्षा के साथ वे इस अवसर पर उपस्थित होते हैं।

तेरव्ही पर सामूहिक मृत्यु भोज का पूर्व में प्रचलन नहीं था। न ही हिन्दु धर्म ग्रन्थों में कहीं इसका उल्लेख मिलता है। भगवान राम द्वारा भी सामूहिक मृत्यु भोज दिए जाने का रामचरित मानस में कहीं उल्लेख नहीं है। मृतक के परिजनों को रोटी खिलाने का उल्लेख तो आता है जो मनोवैज्ञानिक के साथ–साथ व्यावहारिक भी है। जिस घर में दुख पड़ता है उस घर में पका भोजन स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं होता। इसीलिए समाज में एक व्यवस्था जन्मी कि मृतक के घर भोजन बनाना न पड़े, इसलिए गॉव के लोग बारी–बारी से अपने घर भोजन बनाकर दस दिनों तक मृतक के परिजनों को खिलाने लगे। ऐसी प्रथा संसार के किसी भी सभ्य समाज में नहीं पाई जाती। इस प्रथा पर हम गर्व कर सकते हैं। यह प्रथा संसार के समस्त समाज के लिए आदर्श है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कभी किसी परिजन के दुख में शामिल होने पहॅुचे रिश्तेदारों को भारी बारिश पानी व बाढ़ के कारण मजबूरन रूकना पड़ा हो और ऐसी स्थिति में उनके भोजन पानी आदि की व्यवस्था संबंधित घर के परिजनों को करनी पड़ी हो। यही बात समाज में पहॅुचते

पहुॅचते बिगड़ गई। भारी बारिश पानी व बाढ़ के कारण मजबूरन रूकने वाली बात गौण हो गई और भोजन पानी आदि की व्यवस्था मुख्य बात हो गई। और हो सकता है इस तरह समाज में तेरव्ही पर मृत्यु भोज की प्रथा चल पड़ी हो।

कहते हैं, कण कण में भगवान है। भगवान कब किस रूप में आकर हमें शिक्षा दे जाता है यह कह पाना संभव नहीं है। यह हम पर है कि हम उससे सीखें या न सीखें। पंजाब की एक सच्ची घटना का उल्लेख यहॉ करना चाहूँगा। श्री खुशवंतसिंह जाने माने लेखक हैं। उनकी दादी मॉ जब गॉव से शहर रहने आई तो उन्हें शहर की जिंदगी रास नहीं आई। उन्होंने अपनी जिंदगी को खुशमय बनाने के लिए रोज दोपहर में घर की छत पर चिड़ियों को दाना चुगाना प्रारंभ कर दिया। वह रोज दोपहर में घर की बासी रोटी को बारीक करके चिड़ियों के भोजन हेतु छत पर बिखेर देतीं। रोज निश्चित समय पर चिड़िया आतीं और मजे से उन्हें खाती रहतीं। शीघ्र ही चिड़िया उनसे घुलमिल गईं। वे कभी उनकी गोद में तो कभी उनके कंधे पर बैठ जाती। यह एक घंटा दादी का सबसे खुशहाल समय होता। एक दिन अचानक दादी स्वर्ग सिधार गई। उनका शव ऑगन में रखा हुआ था। सभी परिजन और पास–पड़ोस के लोग एकत्रित थे। अचानक चिड़ियों का एक झुण्ड आकर दादी के शव के आसपास बैठ गया। पूरा ऑगन चिड़ियों से भर गया। बहू को लगा चिड़िया दाना चुगने आई हैं तो वह घर में जाकर बासी रोटी ले आई और दादी की तरह ही रोटी के छोटे–छोटे टुकड़े करके पूरे ऑगन में चिड़ियों के खाने के लिए बिखेर दी। सभी चिड़िया शांत बैठी हुई थी। किसी की भी कोई आवाज नहीं आ रही थी। मानो दादी की मृत्यु से सभी दुखी एवं व्यथित हो। जब दादी का शव अंतिम संस्कार के लिए ले जाया जाने लगा तो समस्त चिड़िया चुपचाप कहीं दूर कहीं दूर उड़ गईं। मानो वे उन्हें अंतिम प्रणाम करने ही आई हों, उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने ही आई हो। दादी का शव उठने के बाद पूरा ऑगन रोटी के कणों से भरा पड़ा था,क्योंकि किसी भी चिड़िया द्वारा



रोटी के कणों को चोंच नहीं लगाई गई थी। मानो भगवान उन चिड़ियों के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि तेरव्ही की सूचना मिलने से ज्यादा जरूरी है मृतक के प्रति कृतज्ञता भाव व्यक्त करने के बोध का हमारे मन–मस्तिष्क में उत्पन्न होना। चिड़ियों को घर वालों ने सूचना नहीं दी थी फिर भी वे अपना कर्त्तव्य समझकर उपस्थित हुईं। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे दुखद समाचार की किसी भी माध्यम से सूचना मिलने पर कार्यक्रम में अनिवार्यतः उपस्थित होना हमारा दायित्व है, जैसे एक कौआ मरता है तो सारे कौवे एकत्रित हो जाते हैं। व्यक्ति तो बुद्धिजीवी प्राणी होता है। उससे तो कम से कम इस तरह के आचरण की अपेक्षा की ही जा सकती है। जिस दिन तेरव्ही जैसे अवसरों पर लोग चिड़ियों की तरह बिना किसी अपेक्षा के, बिना किसी शोक संदेश के उपस्थित होना शुरू कर देंगे उस दिन चिड़ियों द्वारा प्रस्तुत किया गया उक्त उदाहरण मानवीयता को नई ऊंचाई देने में सबसे कारगर साबित होगा।

तेरव्ही जैसे अवसरों पर ज्यादा जरूरी है मृतक के परिजनों पर इस असामयिक दुख के पड़ने वाले असर पर सोचना व चर्चा करना तथा उन्हें ढॉढस बॅधाना। क्योंकि संसार के लिए मृतक एक व्यक्ति हो सकता है पर घर वालों के लिए वह उनका पूरा एक संसार भी हो सकता है। व्यक्ति को चाहिए कि ऐसे अवसरों पर वह अपनी मृत्यु के बारे में भी सोचें, अपने शेष जीवन को कैसे सार्थक बनाए इसपर भी विचार करें। क्योंकि सार्थक जीवन तभी जिया जा सकता है जब मृत्यु का बोध हो। भारतीय जीवन दर्शन में मानव जीवन की बड़ी ही सुंदर व्यवस्था है। जन्म के समय शिशु को और मृत्यु के समय मृतक को जो कपड़े पहनाए जाते हैं उनमें जेब नहीं रखे जाते ताकि व्यक्ति कुछ सबक सीखे। परंतु जिंदगी भर आदमी जेब भरने में हीं लगा रहता है। तेरव्ही जैसे आयोजन व्यक्ति को इस तरह के सबक सिखाने के लिए ही अस्तित्व में आए है परंतु अज्ञानता और अनपढ़तावश व्यक्ति सदैव इनसे वंचित ही रह जाता है।

# बात–बात में जात

कहा जाता है–जाति कभी नहीं जाती, अतः बात–बात में जात नजर आ ही जाती है। यदि नजर न भी आए तो बात–बात में जात को लेकर कई बातें कही जाती हैं जो समय के साथ चलकर कहावतों का रूप ले चुकी हैं। जात को लेकर बात–बात में बोली जाने वाली प्रचलित कहावतें यहॉ प्रस्तुत हैं। इन कहावतों को एक धरोहर के रूप में संजोना सतपुड़ा संस्कृति संस्थान का उद्देश्य है। इसके पीछे किसी जाति विशेष या किसी व्यक्ति विशेष को अपमानित करना इसका उद्देश्य नहीं है। जाति किसी मनुष्य के पैदा होने से लेकर उसकी मृत्य तक की मान्यता, स्वीकृति, उत्सर्ग, स्वभाव, धार्मिक संस्कार आदि की दिशा तय कर देती है। जाति मानव के सभी संभव संबंधों और जीवन की सभी घटनाओं और जीवन से पूर्व तथा बाद के सभी मामलों में दखल रखती है। जाति के स्वभाव के आधार पर ही लोग उनसे संबंध निश्चित करते हैं और सावधान रहते हैं। बात–बात में किसी व्यक्ति विशेष या जाति विशेष के संबंध में जानकारी बॉटना पवारी परम्परा है। किसी व्यक्ति की जाति के संबंध में कहा गया है–

- जाति स्वभाव न छूटे, कुत्ता टॉग उठाकर मूते।
- जात का बैरी जात, काठ का बैरी काठ।
- जात की जानकारी उसके चलने, बोलने, बाल, वस्त्र तथा खाने के ढंग से हो जाती है।
- जात का खाया दाम और कुत्ते का खाया चाम किसी काम का नहीं।
- जात को देख जात जले।
- भूख न देखे जात–कुजात। नींद न देखे टूटी खाट।
- भूख न देखे बासी भात। नींद न देखे टूटी खाट।
- छोटी जात, करे उत्पात।
- बड़ी जात बात से, छोटी जात लात से।
- हाथ बेची, जात नहीं बेची।



- कामी के साख नहीं , लोभी के जात नहीं।
- माथा मुड़ाके फजीयत भये, जातपात दोनों से गये।

**अहीर**

- अहीर बेपीर, खाए रबड़ी बताए खीर।
- एक अहीर, दूसरो जवान, तीसरो खेत म नौ मन धान।
- अहीर कितना भी सयाना,लोरिक छोड़ न गाए गाना।
- अहीर के घर मेहमान,तो लप्सी ही पकवान।

**ब्राह्मण**

- ब्राह्मण, कुत्ता, हाथी, नहीं जाति के साथी।
- ब्राह्मण के हाथ और हाथी की सूँड को आराम नहीं।
- आठ आना पर दुर्गा पाठ, सत्यनारायण सूखी<br>इससे दुख दूर न हो तो, करम की चूकी।
- ब्राह्मण ठाठ में, बनिया खाट में।
- ब्राह्मण भूखा, यदि हाथ सूखा।
- ब्राह्मण को दी बूढ़ी गाय, धर्म नहीं तो दरिद्र जाय।
- ब्राह्मण, नाई कुत्ता जात देख गुर्राय<br>कायस्थ, कौआ, मुर्गा जात देख हर्षाय।
- ब्राह्मण कुत्ता हाथी, नहीं जाति के साथी।
- ब्राह्मण कुत्ता, भाट,जाति जाति को काट।
- ब्राह्मण से ब्राह्मण मिले, उनमें ये संस्कार<br>लेन–देन कुछ नहीं, नमस्कार ही नमस्कार।
- काला ब्राह्मण गोरा चमार, इनपर न करो एतबार।
- जब उठाई झोली, तो क्या ब्राह्मण क्या कोली।
- ब्राह्मण वेश्या की जोड़ी, जितना दो उतना थोड़ी।
- बारा ब्राह्मण बारा बाट, बारा लोहार एक ही बाट।
- ब्राह्मण को नौकर नहीं रखना, कसाई की भाकर नहीं खाना।
- किसी का कोई मरे, ब्राह्मण का श्राद्ध बढ़े।

## बनिया

- पहले शाह, बाद में बादशाह।
- बनिया मरुस्थल में भी नीलामी कर देता है।
- बनिया जिसका यार, दुश्मन की नहीं दरकार।
- बनिया का जी धनिया बराबर।
- नामी बनिया कमा खाय,बदनामी चोर मारा जाय।
- बनिया मीत न वेश्या सती, सच न बोले एक रत्ती।
- जान मारे बनिया, अनजान मारे चोर।
- बनिया बेटा जब लिखे अक्षर पे मात्रा न देय
  हींग मिरच जीरा लिखे, हग मर जर कर देय।
- हाथ की सफाई, और डण्डी का फेर
  दूसरा का तीन पाव,बनिया का सेर।
- बनिया, नीबू, आम दबाने पर ही रस देते हैं।
- घटिया अनाज किसान खाय, अच्छा अनाज बनिया ले जाय।
- खाली बनिया क्या करे, इस कोठी का उस कोठी में भरे।
- बनिया काम के पहले और जाट काम के बाद सोचता है।
- बनिया लेता भी खाए और देता भी खाए।
- बनिया लड़ेगा तो घर की ईंट ही ऊखाड़ेगा।
- बनिया गिरेगा तो कुछ देख कर ही गिरेगा।
- कल का बनिया, आज का सेठ।
- एक बनिया से बाजार नहीं भरता।
- बनिया लूटने कि लिए, गधा कूटने के लिए।

## दर्जी

- दर्जी, सिलाई मनमर्जी।
- जब तब जीना, तब तक सीना।
- दर्जी जीता जब तक सीता।
- दर्जी की सुई कभी मखमल में कभी टाट में।



## बढ़ई

- बड़े बढ़ई छोटे लुहार, खींच–खींच के बढ़ावे चमार।
- लुहार
- लुहार की गली में सुई बेचना बेकार।
- गाड़ी लुहार का कोई गॉव नहीं।
- कुछ लोहा खोटा कुछ लुहार।
- सौ सुनार की एक लुहार की।

## कलार

- कलार की बेटी भूख से छटपटाए तो भी कहे उसने पी होगी।
- कलार की बेटी डूबने चली, लोग कहे मतवाली।
- कलार के घर का पानी भी शराब लगता है।

## तेली

- एक तेली तेली, सौ–तेली मेली।
- गरीब तेली, फिर भी अधेली।
- तेलन से क्या धोबन घाट, उसके मूसल, उसके लाट।
- तेली का तेल गिरा हीना हुआ, बनिये का नोन गिरा दूना हुआ।
- कहॉ राजा भोज, कहॉ गंगू तेली।
- तेली जोड़े धार धार, खुदा ले जाए एक ही बार।
- तेली का बैल घर में, पचास कोस घर में।

## डोम

- डोमनी का पूत ढोमनी बजावे, अपनी जाति खुद ही बतावै।
- मुॅह लगाई डोमनी, गावे ताल बेताल।
- हटिया के चाउर, बटिया के पानी, बैइठत खाली डोमवा की रानी।
- डोम ने खाई भॉग, कर दी ऊपर टॉग।
- डोम जोगी ने लिया जोग, फट्या लत्ता, बढ़या रोग।

## सुनार

- सुनार का सोना और अनाड़ी का घोड़ा नहीं बिकता।
- सोना सुनार के, गहने ग्राहक के।

- सुनार अपनी माँ की नथ से भी सोना चुराता है।
- घड़ै सुनार, पहने नार।
- बाघ न देखा हो तो बिल्ली देख लो,
  चोर न देखा हो तो सुनार देख लो।
- सौ सुनार की, एक लुहार की।
- सनार से नाक–कान छिदाए तो पीड़ा नहीं होती।

**जुलाहा**

- आठ जुलाहा, नौ हुक्का, तब भी धक्कम धक्का।
- गगरी भर अनाज, जुलाहा समझे राज।
- सर हारो तो हारो, गज भर न फारो।
- जुलाहे की जूती और सिपाही की जोय, धरी–धरी पुरानी होय।
- खेत खाय गधा, मार खाय जुलाहा।
- रूई न कपास, जुलाहे में लट्ठमलट्ठा।
- जुलाहे की छछूरी, छने में बिछूरी।
- बेवकूफ को अन्न, जुलाहे को धन की कीमत नहीं।

**कुम्हार**

- कुम्हार के घुईपाख, दूसरा के जीव राख।
- घड़ै कुम्हार, भरे संसार।
- माँ की कोख, कुम्हार का आवा, कोई गोरा कोई काला।
- कुम्हार का गधा जिसके पीछे मिट्टी देखे उसी के पीछे दौड़े।
- आगे नाथ न पीछे पगहा, सबसे अच्छा कुम्हार का गधा।
- कुम्हार की बहू आज नहीं तो कल मिट्टी सानेगी।
- कुम्हार को मिट्टी का दुख।

**धोबी**

- धोबी पर धोबी बसे, तब कपड़ा पर साबुन पड़े।
- धोबी की बेटी को न घर सुख न घाट पर सुख।
- न धोबी के दूसरे जानवर, न गधा के दूसरे मालिक।
- धोबी के घर चोर, खोता कोई और।



- धोबी धोए, प्यासा रहे।
- नंगों के गाँव में धोबी का क्या काम।
- सगी सासु नी सासु, धोबिन का पाय लागू।

**नाई**

- पक्षी में कौआ, आदमी में नौवा।
- नाई की बरात में सभी ठाकुर।
- नर में नाई,पंखेरू में काग, पानी में कछुआ,तीनों धोखेबाज।
- नाई की परख नाखून में।
- नाई, दाई, वैद्य, कसाई, इनका सूतक कभी न जाई।
- नाई, बामन,कुत्ता, जात देख गुर्राय।
- अंधी नाईन, आइने की तलाश।
- नौ नाई, पौन लुगाई।
- कटेगा भाऊ का, सीखेगा नाऊ का।
- नाई के आगे किसका सिर नहीं झुकता।
- नाई सबके पैर धोये, पर अपने धोत लजाये।

**राजपूत**

- रजपूत, जाट, मूसर के धनुही, टूटे पर टूटे नवे न कबही।
- न क्षत्रिय भगत, न मूसल धनुष।
- जहाँ राजपूत, वहाँ बात मजबूत।
- बामन हो चोरी करे, यदि विधवा पान चबाय।
  रजपूत हो रन से भगे, तो जन्म अकारत जाय।

**ठाकुर**

- हँसते ठाकुर, खाँसते चोर, इन दोनों का आया ओर।
- भूखा ठाकुर, आग चबावै।
- ठाकुर की बरात में हुक्का कौन भरे।
- दूसरों की ठगने वाला ठग,अपनी ठगने वाला ठाकुर।
- ठाकुर और पहाड़ की ठोकर सहना पड़ता है।

**चमार**

- चंदन पड़ा चमार घर,नित उठ कतरत चाम।
  नित उठ चंदन रोवता,नीच से पड़ा है काम।
- चमार की जूती चमार के सिर।
- चमार की देवी की पूजा भी जूतों से होती है।
- सावन भैसा,माघ सियार। अगहन बरजी चैत चमार।
- बेटा लायेगा चमारी, बहू कहलाएगी हमारी।
- चमार,मूंज और चूना,कूटे से होवे दूना।

**कुन्बी**

- कुन्बी भट, कढ़ी चट
- कुन्बी यार, चतुर सियार।

**किरार**

- किरार से रार ठीक नहीं।
- किरार में बोदे की ताकत।
- किरार को खिलाना, आफत मोल लेना।
- बोदा, भैस और किरार, किसी की नहीं सुनते यार।

**गोंड**

- गोंड को लो भोंद।
- गोंड बाबा गोंड, भिड़े तो दे रौंद।

**पवार**

- पवार यारों के यार, दुश्मन को दे मार।
- प्यार से पवार, नहीं तो परमार।
- पवार से पंगा, कर देगा नंगा।



# पहेली पूछना व बूझना

पहेलियॉ हमारी सोच को पैना करती हैं। ये मनोरंजन तो करती ही है, साथ ही ज्ञान भी बढ़ाती हैं। वर्षों से पहेलियॉ दिमागी कसरत और स्वस्थ मनोरंजन का साधन रही हैं। पहेलियॉ समय के सदुपयोग का सबसे अच्छा जरिया है। खेती का काम पूरा करके थका–हारा किसान जब अपने घर लौटता है तो ऑगन में बिछी खटिया पर वह सुस्ताता है। और घर के अन्य सदस्य उसके आसपास बैठकर पहेलियॉ पूछते और बूझते हैं। घर में जब कोई मेहमान आता है तो वह भी अपने साथ नई पहेलियॉ लेकर आता है। इस तरह पहेलियॉं पूछने और बूझने का दौर गॉवों में प्रायः वर्ष भर किसी न किसी रूप में जारी रहता है। शादी–विवाह के अवसर पर भी पहेलियॉ पूछने और बूझने का दौर मेहमानों का खूब मनोरंजन करता है। घर के किसी निश्चित स्थान पर बैठी महिलाओं द्वारा भोजन कर रहे मेहमानों से पहेलियॉ गा–गा कर पूछी जाती है और मेहमान भोजन का मजा लेते–लेते उन्हें बूझते हैं। कई बार मेहमानों द्वारा पहेली न बूझ पाने या गलत उत्तर देने पर महिलाओं द्वारा संबंधित व्यक्ति से भद्दा मजाक भी किया जाता है। जिसका किसी भी पक्ष द्वारा बुरा नहीं माना जाता अपितु इसके मजे ही लिए जाते है।

1. गर्मी में जिससे घबराते जाड़े में हम उसको खाते
   उससे हर चीज चमकती,दुनिया भी खूब दमकती।
2. खुली रात में पैदा होती,हरी घास पर सोती
   मोती जैसी मूरत मेरी, बादल की मैं पोती।
3. छिलका न डंठल,सफेद–सफेद होय
   खाय सारी दुनिया,कहीं पैदा नी होय।
4. प्यार करूँ तो घर चमका दूँ, वार करूँ तो ले लूँ जान
   जंगल में मंगल कर दूँ, कर दूँ शहर वीरान।
5. मुँह खुला और छूट गया एसका अपना देश
   क्या कुछ न बनना पड़ा,बदल–दल कर भेष।

6. एक गॉव असो जेका चारी तरफ पानी
उत्तर दिहे सही ते कहलाए तुम ज्ञानी।
7. ठंडी हवा संदेशा लाती,तब धरती पर आती
बच्चों के मन को भाती कृषकों को सुहाती।
8. घास–पात खाकर मैं जीती
पानी पीते ही मर जाती।
9. लिया काला, वापरा तो लाल
फेंका सफेद, गजब का माल।
10. पानी मेरा बाप,पानी मेरा बेटा,
आसमान में रहता,मैं लेटा लेटा।
11. इक नारी का मैला रंग,
सदा रहे पीय के संग।
12. हमने देखा एक बताशा,पानी में इतराता जाता,
हवा लगे तो फिर वह नजर नहीं आता।
13. हरे भरे बाग में मोती गिरे अनेक
माली गया बीनने,बाकी बचा न एक।
14. एक जगह पर खड़ा हुआ हूॅ,पर हित करते रहता हूॅ
कार्बनडाईआक्साइड खाकर आक्सीजन देता रहता हूॅ।
15. पैदा हुई तो बीस फीट, फिर घटी फीट चार
घटकर के घटती गई, कैसी है वह नार।
16. देखने में हरी–हरी, लगने पर लाल
जो भी करे संगत होता लालमलाल।
17. बारह शाखा पेड़ की, बावन उसके फूल
सात पंखुड़ी फूल की,इसे न जाना भूल।
18. चौड़ा पेट बना है जिसका,जलती जिसमें ज्वाला
औरों के पेटों की वह नित आग बुझाने वाला।
19. एक नार का पेट न ऑत,
ऊपर–नीचे दॉत ही दॉत।



20. जंगल में मायका,घर–घर ससुराल।
घर में लगते ही कचरे का काल।
21. एक नार के पेट में कीली,
कीली बिन हो जाए ढीली।
22. दो पॉव और दो ही सर,
ऐसी नार रहे हर घर।
23. सोने की वह चीज है,बिके हाट बाजार।
पॉव भी उसके चार हैं,चलने से लाचार।
24. रोज मुझे तुम देखते हो,
साल भर बाद फेंकते हो।
25. काला घोड़ा, सफेद सवारी,
एक के बाद एक की बारी।
26. बाल नुचे, कपड़े फटे, मोती लिए उतार।
यह आफत कैसी पड़ी,नंगी कर दी नार।
27. एक फूल फिर भी पत्ता,
दिल्ली हो या कलकत्ता।
28. मॅुह पे मस्सा,पेट में दाढ़ी।
चूसकर खाए, लाड़ा–लाड़ी।
29. आधा फल हूॅ, आधा हूॅ फूल,
नाम बताओ, जाना न भूल।
30. तन गठीला,खाने में रसीला।
31. बचपन में होती हरी,पर बुढ़ापे में लाल।
जो भी खाए उसका, हो जाए बुरा हाल।
32. कॉच का महल,कचनार की कली,
अमृत की बूॅद, मिश्री की डली।
33. गोरी नारी, पहनी हरी सारी।
34. बाहर बाल भीतर पानी, बीच में सुंदर काया।
जिसने पाया बड़े चाव से, तोड़–तोड़कर खाया।

35. हरा चबूतरा,लाल मकान
जिसमें बैठे काले पठान।
36. बाहर से हरा,पर अंदर से लाल
खाने में मीठा, पर मोटी खाल।
37. दूध का पोता, दही का बच्चा
लोग जिसको, खाते कच्चा।
38. एक मिठाई खेत में, खड़ी खड़ी इठलाय
महीनों तक ताजा रहे, ना वह मुरझाय।
39. एक मिठाई है लगी, झाड़ी बीचों बीच,
खाना भाई ध्यान से,खड़े सिपाही तीस।
40. रंग बिरंगी,ठंडी मीठी,सबके मन को भाती
नर–नारी बच्चे बूढ़े, सबको ही ललचाती।
41. पूरी तो भी पूरी, आधी तो भी पूरी।
42. कॉटे बीच पैदा हुए,खाए जग संसार
शबरी देती प्रेम से खाए पालनहार।
43. एक घर में सोना रखा, चॉदी की दीवार
जाने को रस्ता नहीं,बाहर से ही पुकार।
44. एक गेंद में रहता पानी,
आधा सोना, आधा चॉदी।
45. छोटे से सूरदास
कपड़े पहने सौ पचास।
46. छोटा सा फकीर,
पेट में लकीर।
47. इसमें एक अनोखी बात,
मुँह कड़वा पर मीठा गात।
48. जला तो सबके मन भाया,
बूझा तो कुछ काम न आया।
49. न पहने न खावे,
बूढ़ों को राह दिखावे।



50. छोटा सा घर तुरत बनाऊं,
मक्खी मच्छर दूर भगाऊं।
51. आधा लोहा आधा लकड़ी,एक तरफ रखता है धार,
बालों का वह होता दुश्मन,करता उनका बेड़ा पार।
52. आगे घेरा पीछे घेरा,जंजीर बॅधी पॉवों में,
सरपट वह दौड़ा करती, शहर–गॉवों में।

**उत्तर**– 1. धूप 2. ओस 3. ओला 4. बिजली 5. कपास 6. पृथ्वी 7.बारिश 8. आग 9.कोयला 10.बादल 11.परछाई 12.बुलबुला 13. ओस की बूँदें 14.पेड़ 15. परछाई 16. मेंहदी 17.साल 18. चूल्हा 19. कंघी 20. झाड़ू 21.कैंची 22.कैंची 23.खटिया 24.कलेण्डर 25.तवा और रोटी 26. भुट्टा 27.बंदगोभी 28.आम 29.गुलाजामुन 30.गन्ना 31.मिर्चा 32.अंगूर 33. मूली 34. नारियल 35.तरबूज 36.तरबूज 37.छाछ 38. गन्ना 39. शहद 40. कुल्फी 41.पूरी 42.बेर 43.अण्डा 44.अण्डा 45.प्याज 46.गेहूँ 47.ककड़ी 48. दीया 49.लाठी 50.मच्छरदानी 51. उस्तरा 52.सायकल.